* अध्याय-पाँचवा *

** आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विभाजन की समस्या का तुलनात्मक अध्ययन : साम्य-भेद, विशेषताएँ आदि । **

"और इन्सान मर गया" रामानंदसागर जी ने सन् १९४८ ई. में लिखा है॥ "झूठा - सच" यशपाल जी ने प्रथम भाग सन १९५८ ई. में. तो द्वितीय भाग सन १९६० ई. में. लिखा है। और"तमस" उपन्यास भीष्म साहनी जी ने सन १९७३ ई. में. लिखा है। आलोच्य उपन्यासों का प्रमुख विषय अथवा उद्देश्य है।, "विभाजन समस्या" । इसी को केन्द्र में रखकर अपने - अपने दृष्टि कोण से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक,. धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों को ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित किया है।

** विषयगत प्रकरण तथ्य :-

"और इन्सान मर गया" उपन्यास को रामनंदसागर जी ने चार खण्डों में विभाजित किया है॥ प्रथम - खण्ड में लेखक ने विभाजन से उत्पन्न लाहोर की स्थिति, हिन्दू और मुसलमानों की प्रतिशोध की भावना, द्वितीय खण्ड में लाहोर और पंजाब के भयानक अग्निकाण्ड, तृतीय खण्ड में शरणार्थियों की अवस्था अथवा समस्या, चतुर्थ खण्ड में विभाजन के चपेट में आये इन्सान की स्थिति आदि का लेखक ने ऐतिहासिकता के आधार पर चित्रण किया है॥

"झूठा - सच" को यशपाल जी ने दो भागों में विभाजित किया है, प्रथम भाग "वतनऔर देश" में सन १९४३ ई.से लेकर सन १९४७ ई. की राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक,धार्मिक आदि परिस्थितियों का तत्कालीन लाहोर की परिस्थिति याने लोगों की जीवन - चर्या, रहन - सहन, हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक विद्वेष आदि तो द्वितीय भाग में दिल्ली और जालन्धर की शोचनीय स्थिति , विभाजन के बाद संघर्षों के पश्चात् अपने वतन आदि को छोड़कर आये हुए पंजाबी शरणार्थियों की, उनके कैम्पों की स्थिति उनके साहस, आशा और उत्साह से पुरुषार्थी बनने का प्रयत्न, शरणार्थी के प्रति नेताओं की स्वार्थपरक नीति, स्वतंत्र भारत के प्रथम चुनाव के वक्त नेताओं की कूटनीतियाँ आदि का ऐतिहासिक यथार्थ उदाहरणों द्वारा प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया गया है।

■ "तमस" उपन्यास में भीष्म साहनी जी ने मार्च १९४७ ई. से अगस्त १९४७ ई. के. बीच सर्वसामान्य व्यक्तियों की जो असह्य स्थिति हुई, विभाजन के नाम पर जो अत्याचार हुए, साम्प्रदायिक शक्तियाँ जिसप्रकार कार्यक कर रही थीं तथा अंग्रेजों की जैसी राजनीति चली और भारतीय धर्म की अंधाधुंध स्थिति रही इन सभी परिस्थितियों को "तमस" में प्रस्तुत किया गया है। छः मार्च १९४७ को विभाजन को रोकने के लिये बहुसंख्यकों के आधार पर पंजाब और बंगाल का विभाजन करके दो प्रान्तों के निर्माण की योजना कांग्रेस रख चुकी थी। परन्तु इस योजना को मुस्लिम लीग ने अस्वीकार किया और इसके परिणामस्वरूप देश में, विशेषकर पंजाब तथा बंगाल में जो दंगा - फसाद हुए उन्हीं को केन्द्र में रखकर दिल्ली से दूर एक मुस्लिम बहुल जिले में हुए साम्प्रदायिक झगड़ों को " "तमस" में ऐतिहासिक आधार देकर चित्रित किया गया है॥

इसप्रकार तमस को छोड़ शेष दो उपन्यासों में विभाजनपूर्व काल के साथ - साथ विभाजन के बाद की स्थितियों के चित्र प्राप्त हैं। "तमस" का चित्र - फलक छोटा, अत: अधिक सूक्ष्म और प्रभावशाली, प्रभावशालि है। इसमें काल के फलक के विस्तार की अपेक्षा उसे और उसे और नुकीला बनाने की कोशिश की गई है॥

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित विभाजन की समस्या का <u>ऐतिहासिक आधारोंपर तुलनात्मक अध्ययन</u> -

** द्वितीय महायुद्ध के बाद जहाँ एक ओर भारत को अंग्रेजों के चंगुल से छुड़ाने के लिये कांग्रेस और लीग के संयुक्त प्रयास चल रहे थे, तो दूसरी ओर वहाँ पारस्परिक फूट जन्म ले चुकी थी। दिसम्बर १९३९ में लीग ने "मुक्ति दिवस" मनाया और मार्च सन १९४० ई. में लाहौर के मुस्लिम - लीग के अधिवेशन में पाकिस्तान की माँग का प्रस्ताव रखा गया। सन् १९४५ ई. मे. द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के कारण देश के आर्थिक स्थिति नाजुक हुई थी। अत: देशवासियों को महँगाई का सामना करना पड़ रहा था। गेहूँ, घी, कपड़ा, चीनी आदि के भाव चढ़े हुए थे। सभी वस्तुएँ राशन से मिलती थीं। -

**

** पाकिस्तान की माँग :-

उपर्युक्त घटनाओं का आधार "झूठा - सच" तथा "तमस" में दिया गया है। "झूठा - सच" में यशपाल जी ने लाहौर के हिन्दू - मुस्लिमों की पारस्परिक फूट से इसे स्पष्ट किया है। इसवक्त लाहौर में मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिसंध्या जुलूस निकाले जा रहे थे, जलसों का आयोजन हो रहा था, इन जुलूसों में मुस्लिम - लीग नारों द्वारा अपनी माँग को प्रस्तुत कर रहे थे। "अल्लाह हो अकबर ! मुस्लिम लीग जिन्दाबाद ! कैदे आजम जिन्दाबाद ! लीग मिनिस्ट्री कायम हो ! खिजर मिनिस्ट्री मुरदाबाद ! हिन्दू मुस्लिम यत्तहाद जिन्दाबाद ! पाकिस्तान ले के रहेंगे !"[१] लाहौर के हिन्दू सहम रहे थे, लीग का बढ़ता जाता आन्दोलन जाने क्या रंग लाये ! "तमस" में भी भीष्म साहनी जी ने हिन्दू - मुस्लिम तनाव को इन्हीं नारों द्वारा स्पष्ट किया है। इसवक्त हिन्दू "कौमी नारा ! वन्दे मातरम् ! बोलो भारत माता की जय ! महात्मा गांधी की - जय !"[२] तो मुस्लिम "पाकिस्तान जिन्दाबाद ! पाकिस्तान जिन्दबाद ! कायदे आजम जिन्दाबाद ! कायदे आजम जिन्दाबाद !"[३] के नारे लगाते थे। "तमस" में लेखक ने कांग्रेस द्वारा पाकिस्तान का विरोध तथा लीगियों ने कांग्रेस पर तथा कांग्रेस में स्थित अपने ही जात भाईयों, जो कांगेस का समर्थन कर रहे थे उनका कड़ा विरोध किया उसे लेखक ने ऐतिहासिक आधार पर स्पष्ट किया है। - "मौलाना आजाद हिन्दुओं का सबसे बड़ा कुत्ता है। गांधी के पीछे दुम हिलाता फिरता है।" जैसे ये कुत्ते आपके पीछे दुम हिलाते फिरते हैं।"[४] पाकिस्तान के विरोध में गांधी जी ने कहा था, "पाकिस्तान मेरी लाशपर बनेगा। इस विचार को लेखक ने जरनैल के "गांधीजी का फरमान है कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा, मैं भी पाकिस्तान नहीं बनने दूंगा।"[५] उक्त कथन से स्पष्ट किया है।

जब मुसलमानों ने मार्च १९४० में लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान की माँग उपस्थित की तब उसका सभी पार्टियों द्वारा किया गया विरोध इस ऐतिहासिक घटना को "झूठा - सच" में यशपाल जी ने मुस्लिम - लीग तथा हिन्दू, सिक्ख आदि पार्टियों के परस्पर विरोधी नारों द्वारा चित्रित किया है। -"

"असेम्बलि चेम्बर की सीढ़ियों पर मास्टर तारासिंह ने मुस्लिम लीग की ललकार के मुकाबले में तलवार खींच ली । जिस समय मास्टर तारासिंह काँग्रेसी, अकाली और हिन्दू सभा के मेम्बरों के साथ असेम्बली चेम्बर से बाहर निकले, चेम्बर के सामने हजारों की तादाद में जमा मुस्लिम - लीगी भीड़ के "नारए हैदरी ! या अलि ! पाकिस्तान जिन्दाबाद !! मुस्लिम - लीग जिन्दाबाद ! ले के रहेंगे पाकिस्तान! खून से लेंगे पाकिस्तान! लीगी वजारत बनके रहेगी !" नारों से आसमान काँप उठा । ---- "मास्टर तारासिंह और हिन्दू - सिक्ख मेम्बर भीड़ के सामने एक साथ खड़े हो गये। मास्टर तारासिंह ने गगन भेदी नारा लगाया - "पाकिस्तान मुर्दाबाद! जो बोले सो निहाल, सतसिरी अकाल !------ "काँग्रेस अकाली दल और हिन्दू महासभा का सर्व सम्मति से संयुक्त निश्चय है कि गवर्नर द्वारा युनियनिस मिनिस्ट्री की बरखास्तगी अवैधानिक है, इसलिए लीग के मंत्रि - मंडल की सरकार को किसी हालत में सहन नहीं किया जाएगा।" [6]

उपर्युक्त ऐतिहासिक आधार पर किए गए चित्रण से विभाजन - पूर्व की हिन्दू-मुस्लिम स्थिति का परिचय मिलता है।

सन् १९४५ ई. में द्वितीय महायुद्ध के समाप्त होने के कारण देश की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। इसको "झूठा - सच" में यशपाल जी ने नायक पुरी तथा उनके परिवार की स्थिति द्वारा चित्रित किया है। "जयदेव पुरी को एक रुपये की चीनी के लिये पौने दो घण्टे तक क्यू में खड़ा होना असह्य व्यथा जान पड़ी । कहाँ देश की स्वतन्त्रता के लिए जूझ जाने का विचार और कहाँ सेर भर चीनी के लिए संघर्ष, परन्तु इसके बचाव न था। युद्ध समाप्त हो गया था परन्तु अनाज की महँगाई बढ़ती जा रही थी। वही हाल कपड़े का था। मास्टर जी अब भी वही धारीदार कपड़े का बदरंग हो चुका कोट पहने रहते थे जो उन्होंने पुरी के जेल जाने से पहले सिलाया था। माँ, तारा और उषा की सलवारों में घुटनों और पहुँचों के ऊपर अनेक पैबन्द और बखिये पड़ चुके थे माँ और बहिनें बाहर जाने के कपड़ों की चिन्ता अपने शरीर की त्वचा से भी अधिक करती थीं।

पुरी पहचान गया था, छोटा भाई हरदेव जो नीली धारी की तब पतलून पहने, था, वह पड़ोसी रतन की छोटी हो चुकी पतलून थी।"७

* कांग्रेस और लीग के तीव्र मतभेदों और पारस्परिक तनाव ने साम्प्रदायिक झगड़ों की शुरआत करा दी थी, मुसलमान हिन्दुओं को और हिन्दु मुसलमानों को कत्ल करने पर आमादा थे। बंगाल में हिन्दुओं को लूटकर उनकी उनकी स्त्रियों को बेइज्जत किया गया। जो लीग कांग्रेस से मिलकर स्वतन्त्रता प्राप्त करने की बात करती थी वही लीग पाकिस्तान बनाने के नारे लगाने लगी थी। कांग्रेस, अकाली दल और हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीगी मन्त्रि-मण्डल को न बनने देने पर उतारू थे। ब्रिटिश नोकरशाही और शासक साम्प्रदायिकता को जन्म देकर फूट डाल रहे थे और झगड़ा - फिसाद करा रहे थे, रेल्वे मजदूर युनियन व स्टूडेन्ट्स फेडरेशन ने जंगी आन्दोलन आरम्भ किया ताकि शान्ति और एकता बनी रहे। इनके प्रयास भी असफल रहे। वर्कशाप में बम फट जाने से अनेक मौतें हुई। इस वक्त जहाँ - तहाँ झगड़े - फिसाद हो जाना, आग लग जाना, लूटमार, बलात्कार, कर्फ्यू लगना आदि सामान्य सी बात हो गयी थी। इन दंगों और फिसादों का मूल कारण था पाकिस्तान की माँग।

कांग्रेस और लीग के तीव्र मतभेदों तनाव आदि को लेखक ने "झूठा - सच" में असद और डॉ. प्राणनाथ की बातचीत से चित्रित किया है। असद बोला, "डॉक्टर साहब, मैं अर्ज कर रहा था हिन्दू और मुस्लिम मुहल्लो में जहर फैलाया जा रहा है। मुल्ला मस्जिदों में रो - रोकर पैगम्बर के नाम से जिहाद के लिए फतवे दे रहे हैं। हथियार इकट्ठे करने की योजनाएँ बन रही हैं। यकीन रखिये, यहाँ दंगे की ऐसी आग भड़केगी कि कलकत्ते से भी ज्यादा खून होगा। अगर खिजर परवाह नहीं करता तो गवर्नर का ध्यान इस ओर दिलाया जाना चाहिए - - - - - - ।" "साम्प्रदायिक दंगों से नौकरशाही को कोई भय नहीं है।" डॉक्टर ने कहा, "दंगों से नुकसान पहुँचता है। कांग्रेस और लीग की शक्ति को।" आगे चलकर, यशपाल जी ने ५ मार्च की पत्रिका के समाचार से हिन्दू - मुस्लिम दंगों को स्पष्ट किया है। -

५ मार्च प्रात: पाँच बजे कर्फ्यू समाप्त हुआ था इसलिए पत्र कुछ विलम्ब से आये। पत्रों में पहले पृष्ठपर ४ मार्च की संध्या तक लीग मिनिस्ट्री न बन सकने का समाचार था। यह भी समाचार था कि हिन्दू - सिक्ख और काँग्रेसी लोगों ने लीग मिनिस्ट्री और पाकिस्तान की स्थापना का विरोध करने के लिए "ऐंटी पाकिस्तान लीग" की स्थापना की थी। सर्व - सम्मति से इस लीग का डिक्टेटर मास्ट तारासिंह को स्वीकार किया गया था। रावलपिण्डी में भयानक दंगा हो जाने और पुलिस द्वारा स्थिति सँभाल लेने, लाहौर में हिन्दू सिक्ख विद्यार्थियों के जुलूस पर गोली चलाये जाने और आग लगने तथा दिल्ली दरवाजे के समीप छुरे चलने के समाचार थे।[९]

लीग का, पाकिस्तान की माँग का आन्दोलन बढ़ता ही जा रहा था। पूर्वी पंजाब से त्रस्त मुसलमानों के पश्चिम की ओर भागने के और पश्चिम पंजाब से भयभीत हिन्दुओं के पूर्व की ओर भागने के समाचार आ रहे थे। सन १९४२ के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय तलवार, बन्दूक, पिस्तौल का नाम सुनकर पसीना आ जाता था अब पुरी सुनता की लीग निधड़क तलवारें, बर्छे, बन्दूकें जमा कर रहे थे।[१०]

"तमस" में भी साहनी जी ने विभाजन पूर्व की हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिकता का यथार्थ चित्रण किया है। मुस्लिमों का काँग्रेस के प्रति व्यवहार का लेखक ने महमूद साहिब तथा बख्शीजी के वार्तालाप से उपस्थित किया है। - महमूद साहिब कहते हैं, "काँग्रेस हिन्दुओं की जमात है। इसके साथ मुसलमानों का कोई वास्ता नहीं है।" इसपर बख्शी जी कहते हैं। - काँग्रेस सब की जमात है। हिन्दुओं की, सिक्खों की, मुसलमानों की। आप अच्छी तरह जानते हैं महमूद साहिब, आप भी पहले हमारे साथ ही थे।" आगे महमूद साहिब कहते हैं कि, "हिन्दुस्तान की आजादी हिन्दुओं के लिए होगी, आजाद पाकिस्तान में ही मुसलमान आजाद होंगे।"[११]

आगे रिचर्ड के इस कथन से कि, "हिन्दुओं और मुसलमानों में तनातनी बढ़ रही है, शायद फसाद होंगे।" - लेखक ने उसवक्त की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास

किया है। आगे चलकर हिन्दू महासभा की बैठक में मन्त्री जी ने नगर की बिगड़ती स्थिति का ब्यौरा दिया, मस्जिद के सामने पाये गये सुअर की लाश, जामा मस्जिद में लाठियाँ, भाले आदि असला इकट्ठा किये जाने की चर्चा हुई। अपनी सुरक्षा के लिये क्या - क्या प्रबन्ध किया जाना चाहिए इसकी भी चर्चा हुई - अपने - अपने घर में एक - एक कनस्तर कड़वे तेल का रखें, एक - एक बोरी कच्चा या पक्का कोयला रखे। उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है. जलते अंगारे छत पर से फेंके जा सकते हैं। - - - -" १२

आगे चलकर मुसलमानों द्वारा मण्डी में आग लगा दी जाती है, "अल्लाह - हो अकबर !" - - - - "हर - हर - हर - महादेव !" आदि नारों से तनाव ने और उग्र रूप ले लिया था। - लाला लक्ष्मीनारायण कहते हैं, "पिछली बार फिसाद भड़का था तो केवल मण्डी में आग ही लगी थी, मार - काट नहीं हुई थी। अब की बार हवा में जहर ज्यादा है, लोग भड़के हुए हैं।" १३ मण्डी में लगी आग की भयानकता को लेखक ने बड़े सजीव ढंग से चित्रित किया है।

** ब्रिटिश शासकों की नीति के चित्र :-

"और इन्सान मर गया" में रामानंद सागर जी ने भोलापांधे गली के युवकों की बातों द्वारा ब्रिटिश शासन की नीति को स्पष्टकिया है - "यह सब गवर्नर की शरारत है, नहीं तो इस मामूली मजिस्ट्रेट की क्या ताकत है। इधर हिन्दू जल रहे थे उधर कर्फ्यू भंग करने के जुर्म में आग बुझानेवालों पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। क्या कोई और व्यक्ति यह कर सकता था। उसे उसी समय पदच्युत न कर दिया जाता। यह सब अंग्रेजों की चाल है। वह तुम्हें आजादी के बदले यही कुछ देंगे।" १४

यशपाल जी ने भी "झूठा - सच" में अंग्रेजों की कूटनीति को स्पष्ट किया है।- स्टूडेन्ट फेडरेशन द्वारा निकाले जुलूस में जब पुलिस कॉन्स्टेबल वहीद हिन्दू - मुस्लिमों में फूट डालने का प्रयत्न करता है तो प्रद्युम्न ने अंग्रेजों की कूटनीति का पर्दाफाश करते हुए कहा, - "हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान भाइयों ! आप ने अपनी आँखों से देख लिया है कि अंग्रेज सरकार और उसके

टोड़ी कुत्ते आपस में लड़ा देने की कैसी साजिशें करते हैं। इस जुलूस में हमारी मुसलमान और हिन्दू बहनें एक साथ हैं। ... .. . दोस्तो, कांग्रेस, लीग, हिन्दू महा सभा और अकाली पार्टी का संयुक्त मंत्री - मंडल कायम करो।"१५

और आगे खिजर के त्याग पत्र के संबंध में दिये गए बयान द्वारा लेखक ने ब्रिटिश शासन की नीति को स्पष्ट किया है। - "खिजर कहता है, क्योंकि एटलि ने १६ फरवरी के वक्तव्य में कहा गया है की, जून १९४८ में जिस भाग में जो राजनैतिक दल अधिक सशक्त होगा, ब्रिटिश सरकार उसी को स्थानीय शासन सौंप देगी इसलिये नये सिरे से मंत्री - मंडलों के निर्माण का अवसर दिया जाना चाहिए।" नरेन्द्र सिंह के इस संदेह पर कि, "यह क्यों, खिजर अब - अपनी युनियनिष्ट हुकूमत नहीं चाहता ?" - - - - - "क्या वह युनियनिष्ट हुकूमत नहीं चाहता ?" पुरी ने कहा "यह बयान खिजर का नहीं, गवनर जैकिन्स का है। मतलब है, सब पार्टियों को लड़ने के लिए मौका और प्रोवोकेशन [उत्तेजन] दिया जाय।" १६

"तमस" में भी लेखक ने स्थान -, स्थान पर रिचर्ड, लिजा तथा कांग्रेसी जरनैल के कथन से ब्रिटिशों की शासन नीति का पर्दाफाश किया है जिसमें अंग्रेज अपनी कूटनीति से हिन्दू-मुस्लिमों में साम्प्रदायिक तनावों को किसप्रकार बढ़ावा दे रहे थे इसे स्पष्टकिया है। - हिन्दू और मुस्लिम दोनों वर्गों के साथ क्या प्रशासकीय सलूक करना चाहिए यह रिचर्ड को ठिक पता है, वह कहता है - "हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन - सी समानता पायी जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन - किन बातों में एक-दूसरे से अलग हैं।" लीजा कहती है, "देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो। क्यों ठीक है ना?" रिचर्ड कहता है, अगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनाव पाया जाता है तो मैं क्या कर सकता हूँ ?" लीजा कहती है, तुम उनका झगड़ा निपटाओगे नहीं ? तब रिचर्ड कहता है, "मैं उनसे कहूँगा तुम्हारे धर्म के मामले तुम्हारे निजी मामले हैं, इन्हें तुम्हें खुद सुलझाना चाहिए।"१७

जब शहर में फसाद छिड़ जाता है तो शहर में दंगों को रोकने का प्रस्ताव लेकर सभी पार्टियों के लोग डिप्टी कमिशनर रिचर्ड के पास जाते हैं

तो वह कर्फ्यू लगाने, फौज बिठाने तथा हवाई जहाज तक उड़ाने से इन्कार करता है। मेरे अधीन कुछ नहीं हैं। बख्शी बख्शी जी कहते हैं - "आपके अधीन सब - कुछ है, साहब, अगर आप कुछ करना चाहें तो।" रिचर्ड कहता है - "वास्तव में आपका मेरे पास शिकायत लेकर आना ही गलत था। आपको तो पण्डित नेहरू या डिफेंस मिनिस्टर सरदार बलदेव सिंह के पास जाना चाहिए था। सरकार की बागडोर तो उनके हाथ में है।"१८ आगे मनोहरलाल स्पष्ट शब्दों में कहता है, "इन फिसादों के लिए जिम्मेदार कौन है? सब सरकार उसवक्त कहाँ थी जब शहर में तनाव बढ़ रहा था, अब कर्फ्यू लगाया गया है, उसवक्त क्यों नहीं लगाया गया ? उसवक्त साहब बहादुर कहाँ थे ? १९

शहर में बढ़ते तनाव को देखते करीमखान खिजर तथा मूसा की कहानी कहकर आगे बताता है कि, "जो बात हाकिम देख सकता है वह आम लोग, तुम और हम नहीं देख सकते। अँग्रेज हाकिम की आँख चारों तरफ देखती है वरना क्या यह मुमकिन है कि मुट्ठीभर फिरंगी सात समन्दर पार से आकर इतने बड़े मुल्क पर हुकूमत करें?। अँग्रेज बहुत दानिशमन्द हैं दूर अन्देश है।" शहर की तनावपूर्ण स्थिति को देखते काँग्रेसी कार्यकर्ता जरनैल कहता है, "यह सब शरारत अँग्रेज की है जो भाई - भाई को आपस में लड़ाता है ।" - - - - - साहिबान, गांधी जी ने कहा है कि, हिन्दू-मुसलमान् भाई - भाई हैं। इन्हें आपस में नहीं लड़ना चाहिए। मैं आप से, बच्चे, बूढ़े, ज्वान मर्द औरतों सभी से अपील करता हूँ कि आपस में लड़ना बन्द कर दें। इससे मुल्क को नुकसान पहुँचता है। देश की दौलत इंगलिस्तान में जाती है, अँग्रेज - यह गोरा बन्दर, हम पर हुकुम चलाता है - - - - - - - - -" साहिबान मैं आप से कहता हूँ कि हिन्दू - मुसलमान भाई - भाई हैं, शहर में फिसाद हो रहा है आगजनी हो रही है और उसे कोई रोकता नहीं। डिप्टी कमिश्नर अपनी मेम को बाँहों में लेकर बैठा है और मैं कहता हूँ कि हमारा दुश्मन अँग्रेज है और/हम गांधीजी कहते है कि वही हमें लड़ाता है और हम भाई - भाई हैं। हमें अँग्रेज की बातों में नहीं आना चाहिए।" २० उपन्यास में चित्रित काँग्रेसी लीडर बख्शी जी भी यही महसूस करते हैं कि, "फिसाद करवानेवाला भी अँग्रेज, फिसाद रोकनेवाला भी अँग्रेज, भूखों मारनेवाला भी अँग्रेज, रोटी देनेवाला भी अँग्रेज, घर से बेघर करनेवाला

भी अँग्रेज, घरों में बसानेवाला भी अँग्रेज - - - - - " फसाद के शुरु होते ही बख्शी जी बार - बार, यही कहते हैं, "अँग्रेज फिर बाजी ले गया।"२१ इसतरह उपर्युक्त उदाहरणों से लेखक ने भारत में अँग्रेज शासकों की नीति का पर्दाफाश किया है।

इस समय शहर में हुए दंगें फसादों को, रोकेने तथा शांति बनायेश रखने के लिये रेलवे मजदूर युनियन स्टुडन्ट फेडरेशन ने अनेक प्रयास किये इसे यशपाल जी ने लीग तथा स्टुडन्ट फेडरेशन के जुलूसों से चित्रित किया है। "शीघ्र ही लीग के जुलूसों का आकार बहुत बढ़ गया। जुलूसों में खास कर रेल्वे मजदूर सम्मिलित होने लगे और उनके नारे भी बदल और बढ गये - "हिन्दू - मुस्लिम एक हों। खिजर मिनिस्ट्री मुरदाबाद। सल्तनतशाही मुरदाबाद। हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। पाकिस्तान जिन्दाबाद। कैदे आजम जिन्दाबाद। महात्मा गांधी जिन्दाबाद। हिन्दू - मुस्लिम एक हों। जम्हूरी मिनिस्ट्री कायम हो। हके खुदइख्त्यारी मिले। दुनिया के मजदूर एक हो।" "मुसलमान महीलाओं के द्वारा निकाले गये जुलूसों में स्टूडेन्टफेडरेशन के कार्यकर्ताओं ने शांति तथा अमन के नारे लगाए - "शहरी आजादी जिन्दाबाद। हिन्दू - सिक्ख - मुस्लिम एक हों। जम्हूरी मिनिस्ट्री कायम हो। काँग्रेस लीग एक हो कैदे आजम जिन्दाबाद। महात्मा गांधी जिन्दाबाद।२२

लेकिन उनका यह प्रयास आगे असफल रहा क्योंकि - रेल्वे वर्कशाप में एक बजे की छुट्टी में बड़ा जबरदस्त बम फटा। तीन मर गये और बाइस आदमी जख्मी हो गये हैं। वर्कशाप बन्द हो गया है। मजदूर जिधर-जिधर गये, दंगा फैलता गया। अब दंगा रुकना मुश्किल है।" पुरी ने बताया, "रेल्वे युनियन के पैंतालिस हजार मजदूर अब तक दंगे के खिलाफ थे। उन्हीं के दम से इतने दिन शांति रह सकी। अब तो वे लोग पागल हो गए हैं। इस घटना से सारे शहर में झगड़े - फिसाद शुरु हो गये मजदूरों ने अकबरी मण्डी में आग लगायी - - - -।२३

"तमस" में भी साहनी जी ने इस स्थिति को स्पष्ट किया हैं। - कम्युनिस्टों द्वारा ली गयी मिटिंग में इस विषय को उठाया गया है, देवव्रत कहता हैं, - - "रतो में गड़बड़ की बात करे गलत है। किसी मजदूर बस्ती में अभी तक कोई गड़बड़ नहीं हुई, हाँ तनाव पाया जाता है। साथी जगदीश मुसलमान मजदूरों की बस्ती में बैठा है, लोग अभी भी उसकी बात सुनते हैं, सिख मजदूरों के वहो बीस घर हैं, एक भी वारदात वहाँ पर अभी तक नहीं हुई; लेकिन साथी - जगदीश ने इत्तला दी है कि स्थिति बिगड़ रही है। दो मजदूरों के बीच कल गाली - गलौज हो गया था।" उसी दिन संध्या खबर आयी, रत्ते में, मजदूरों की बस्ती में भी फिसाद हो गया है, दो सिख बढ़ई मारे गए हैं ..... पहले तो देवव्रत ने इस खबर को झूठा कहा, फिर उसे लगा कि "अगर मजदूर आपस में लड़ सकते हैं तो यह विष बहुत गहरा असर कर चुका है।"[२४]

** लीग पाकिस्तान बनाने पर जोर दे रही थी और कांग्रेस यह नहीं चाहता था। किन्तु सत्ताधारी अंग्रेज लीग को बढ़ावा दे रहे थे। जिसके परिणाम-स्वरूप कांग्रेस ने भी पाकिस्तान की निर्मिति को मंजूर कर लिया किन्तु झगड़ा फिर भी बना रहा। जिन्ना महोदय चाहते थे कि पूरा पंजाब और पूरा बंगाल तथा इन दोनों प्रान्तों को मिला सकनेवाले मार्ग के रूप में एक भूभाग सम्मिलित करके पाकिस्तान बनाया जाये जबकि कांग्रेस पूरा पंजाब व पूरा बंगाल भी देने के लिये तैयार नहीं थी। पंजाब और बंगाल का वही भाग जहाँ मुस्लिम जनसंख्या का आधिक्य हो, कांग्रेस पाकिस्तान के रूप में देने के लिये तैयार थी।

आखिर जून के प्रथम सप्ताह में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की स्थापना के लिये बंगाल और पंजाब को हिन्दू-बहुल और मुस्लिम-बहुल भागों में बाँट देने की शर्त स्वीकार कर ली। कत्लेआम और अग्निकाण्ड की घटनाएँ जोरों पर थीं। सुरक्षा का ठेका आमतौर पर पुलिस के जिम्मे होता है किन्तु इन अवसरों पर उच्च पुलिस अधिकारी भी साम्प्रदायिकता के शिकार हो गये थे। वे अपने-अपने विपक्षियों का संहार कराने में सहायता दे रहे थे। अपराधी और निर्दोष का प्रश्न नहीं रह गया था। हिन्दू और मुसलमान एक - दूसरे के खून पर उतारू थे, जिन्होंने इस वक्त न निर्दोष तांगेवाले को छोड़ा न राह चलते राहगीरों को। घोर जनसंहार के लिये ही अनेक मकानों और इमारतों को जला दिया गया था।

इधर पंजाब और बंगाल के विभाजन द्वारा पाकिस्तान के निर्माण की बात लीग द्वारा स्वीकृत कर लेने से लोगों में हलचल और भगदड़ मच गयी थी। कलकत्ता और नोआखाली में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर भयंकर अत्याचार किए, और उसी का बदला आगे चलकर हिन्दुओं ने बिहार में मुसलमानों का कत्ल करके लिया। लोग अपने-अपने वतन को छोड़कर नए निर्मित देश की "सीमा में बसने के लिए आ आने जाने लगे थे। आवास की नयी समस्या खड़ी हो गयी थी। कैम्पों में तादाद से अधिक संख्या में लोक आ - आकर भर गए थे। ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की स्थापना के लिए १५ अगस्त १९४७ का दिन निश्चित कर दिया गया था। और लार्ड माउन्ट-बैटन द्वारा पाकिस्तान की सत्ता १४ अगस्त १९४७ को जिन्ना को व भारत की सत्ता राजेन्द्र प्रसाद को सौंपने की घोषणा कर दी गयी थी। इस घोषणा के होते ही नर - संहार अपनी चरम - सीमा पर पहुँच गया था। एक ओर से दूसरी ओर जाती हुई रेलगाड़ियों में भरे हुए लोगों को कत्ल कर दिया गया था। कलकत्ता का बदला नोआखाली और नोआखाली का बदला बिहार में तथा बिहार का जवाब रावलपिण्डी में दिया जा रहा था। इसवक्त हिन्दू और मुसलमानों में केवल प्रतिशोध की भावना, तथा परिणामस्वरूप भय, आतंक ही पनप रहा था।

** भारत - पाकिस्तान विभाजन से उत्पन्न समस्याएँ :-

उपर्युक्त ऐतिहासिक परिस्थितियों को सागरजी ने "और इन्सान मर गया" में आनंद के विचारों द्वारा व्यक्त किया है। शहर में बढ़ते दंगों को देखकर तथा कलकत्ता, नोआखाली के दंगों तथा वहाँ गांधी जी का शांति प्रस्थापित करने का प्रयत्न देखकर आनंद सोचता है, - - "क्या हजारों साल तक इन्सान केवल रेत का एक महल तैयार करने में लगा रहा ? और फिर आज से हजारों साल बाद भी क्या मानव को इसी प्रकार बिहार और नोआखाली के कंटीले जंगलों और दलदलों में नंगे पाँव - घूम - घूमकर वहशियों को समझाना पड़ेगा, ताकि उनकी वहशत और बर्बरता दूर की जा सके ? और फिर क्या उसे भी इसी तरह झूठे वचन दिये जायेंगे ? तो क्या यह सब कुछ झूठ और फरेब है ?"२५

इसवक्त दंगा - फ़साद बढ़ने तथा सुरक्षा की व्यवस्था आदि को भी लेखक ने उपन्यास में यथार्थता से चित्रित किया है। - आनंद सोचता है, - "उस समय उसे अपने चारों ओर आँसुओं का एक समुद्र दिखायी दे रहा था - विधवाओं और अनाथों के कोटि - कोटि अश्रुओं का एक ठाठें मारता हुआ समुद्र। परन्तु वह अब मिलकर एक भी ताजमहल न बना सके थे, अलबत्ता उस समुद्र के चप्पे - चप्पे पर खून के लाल फव्वारे नृत्य कर रहे थे - फ़सादी के छुरे और पुलिस की गोलियों से मारे जानेवालों के गरल - गरल करके बहते हुए लहू के फव्वारे, जिनकी धारें भूख और व्यथा की आग में जलनेवाले अनाथों और विधवाओं की अश्रुधाराओं में घुल रही थी।" २६

इसी समय उसे यह बात भी याद आ गयी, "मुसलमानों ने उनके मुहल्ले में आग लगा दी थी। और इसके अतिरिक्त आग बुझानेवालों पर पथराव के आलावा वे लोग मुस्लिम पुलिस की मौजूदगी में उन पर आग बुझानेवाले पम्प की सहायता से पानी की जगह और पेट्रोल फेंक रहे थे। इसवक्त "अल्लाहो अकबर" और "हर - हर - महादेव" के नारों से लाहौर का वातावरण और भी तनावग्रस्त बन गया था॥

शहर में साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण चारों तरफ़ फैली आग का वर्णन भी लेखक ने यथार्थ किया है। - "सुबह होते-होते लोग अपने-अपने मकानों की छतों पर चढ़कर यह देखते थे कि, आज शहर में कितने व स्थानों पर आग लगी है। हर कोई एक दूसरे को शहर के भिन्न - भिन्न भागों की ओर इशारे करके कोई न कोई नयी आग दिखा रहा था। कोई - कोई आग पुरानी थी, जो उन्होंने कल भी देखी थी। कोई ऐसी भी थी, जिसे वे कई दिनों से देख रहे थे। और बहुधा वह थी जो रात में भड़की थी। इनके अतिरिक्त कप-र्यू खुलते ही कुछ स्थानों से एक बारीक - सी रस्सी की तरह चक्कर खाता हुआ धुँआ आकाश की ओर उठना शुरू हुआ। देखते - देखते - धुँआ नीले खाकस्तरी रंग में बदल गया। उसके बाद गहरे भूरे रंग का धुआँ किसी कथा - लोक के राक्षस की पुकारों की तरह हवा में उछला, और थोड़ी ही देर में काले बादलों की तरह उमड़ते हुए धुएँ के साथ - ही-साथ आग की प्रचंड लपटें भी आकाश की ओर अपने नुकीले हाथ उठा - उठाकर जैसे फरियाद करने लगीं। २७

लेखक ने इसवक्त के बिहार, बंगाल, कलकत्ता तथा नोआखाली के दंगों के बारे में लिखा है। - मेरा निकटतम साथी सुहैल आज़ीमाबादी है, जिसने बिहार के फ़साद में हिन्दुओं के हाथों बिलकुल तबाह होने के बाद लिखा है कि - "लोगों को यह फ़िक्र है कि हिन्दू मर रहे हैं, मुसलमान मर रहा है, और मुझे यह ग़म है कि हिन्दुस्थान मर रहा है, मानवता मर रही है और वह सभ्य भावनाएँ मर रही हैं जो सहस्त्रों वर्षों के विकास के बाद मनुष्य ने पैदा की थीं। मुझे हिन्दुओं और मुसलमानों के मरने की जरा भी फ़िक्र नहीं है, वह तो प्रतिदिन सैकड़ों नहीं, हजारों की संख्या में पैदा होते और मरते हैं, बल्कि मरने ही के लिए पैदा होते हैं। चुनांचे हिन्दुओं को मारने के लिए मुसलमानों को या मुसलमानों को मारने के लिए हिन्दुओं को किसी प्रकार की तकलीफ़ करने की जरूरत नहीं। असलियत जिस बात पर रोना आता है, वह हिन्दुओं और मुसलमानों के निजी जीवन में ऊँची - ऊँची भावनाओं की बर्बादी है, और वे हैं मनुष्यता, संस्कृति और सदाचार ....."[२८]

उसवक्त पाकिस्तान की माँग स्वीकार कर लेने से लोगों के मन में काँग्रेस के प्रति बहुत नाराजगी थी जो प्रस्तुत उपन्यास में सागरजी ने चित्रित की है। - दंगों के बढ़ते प्रभाव को देखते आनंद सोचता है, जो नेता उस समय अंग्रेजों की जंगी संगीनों के सामने सीना ताने दिखायी देते थे, आज अपने भाइयों की छुरियों से क्यों दूर भाग रहे थे ? आज इनमें से एक भी ऐसा क्यों न निकला, जो आगे आकर यह कहता कि अपने किसी पंजाबी भाई के सीने में भोंकने के पहले अपनी छुरियों को मेरे सीने में उतार दो..... शायद उन्हें इस बात का अवकाश ही नहीं, क्योंकि इस समय तो उन्हें बटवारें के बाद आधे पंजाब के मंत्रिपदों पर कब्जा करने के लिए बहुत भाग - दौड़ करनी पड़ रही है। और आनंद को बहुत अफ़सोस होने लगा कि उस समय उसने इन लालचियों की बातों पर क्यों ध्यान दिया, जो केवल राजनीतिक महत्ता प्राप्त करने या अपने गुनाहों के "स्वदेशी स्क्रीन" चलाने के लिए महात्मा गाँधी और उनकी अहिंसा के गुण गाते फिरते हैं।[२९]

आगे लेखक ने नरोत्तम तथा एक काँग्रेसी कार्यकर्ता की बातचीत से भी इसी स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। नरोत्तम कहने लगा - "जवाहर लाल ने बिहार के हिन्दुओं पर तो बम चला दिये थे, लेकिन अब कहाँ सो गया है।"..... "अरे भय्या, यह सब अपने भाइयों को मारने में शेर हैं, मुसलमानों के सामने भाइयों

भीगी बिल्ली बन जाते हैं। "बीच में ही और एक व्यक्ति ने कहा - "उधर गांधी को देख झट बिहारवालों पर मरनव्रत का रुआब जमा दिया, कोई उससे पूछे कि जो तुम्हें हाथ देगा क्या तुम उसकी बाँह ही काट लोगे ? हिन्दू बेचारे इधर मुसलमानों के हाथों भी मारे जायँ और इधर अपनों की गोलियाँ भी वही खायें।" ताराचंद ने कहा, "काँग्रेस को वोट देकर हमने अपने हक में निश्चय ही बुरा किया है, इसका अफसोस हमें आज होता है, क्योंकि उसके फलस्वरूप आज लीग - जैसी हिन्दुओं की एक भी संस्था ताकत में नहीं है, जो केवल हिन्दू दृष्टिकोण से कार्य करे, एक महासभा थी, सो उसे भी काँग्रेस की बड़ी - बड़ी बातों में आकर हमने अपने हाथों डुबा दिया, और काँग्रेस है कि मुसलमानों के सामने बिछी जा रही है।" इसपर काँग्रेसी ने कहा, "आप शायद यह भूल जाते हैं कि गांधी और काँग्रेस ही वह संस्था है, जिसने संसार में पहली बार इतने कम रक्तपात से संसार की सबसे बड़ी सल्तनत को अधेड़ के रख दिया है, और जवाहर लाल ने जो बम्बारी की आज्ञा दी थी, वह कठोर अवश्य थी, परंतु नावाजब नहीं। उन्होंने आगे कहा "गांधी जी की अहिंसा बहादुर की अहिंसा है, कायर की अहिंसा नहीं।"30

इस बात पर प्रीतमसिंह ने कहा, "यदि इनमें कोई कर्मयोग्य शक्ति होती, तो महात्मा गांधी के सबसे बड़े लेफ्टिनेंट आज इसतरह उनसे मुँह न फेर लेते । टण्डनजी का ताजा वक्तव्य पढ़ा है ? वह इस बुढ़ापे में भी अपना क्रीड बदलने पर मजबूर हो गये हैं, और अब राइफल - क्लबें बनाने पर जोर दे रहे हैं, इसी प्रकार दूसरे लोगों को देख लो। जवाहरलाल बम्बारी कराते फिरते हैं, और पटेल ने भी प्राइवेट मुलाकातों में लोगों को हथियार इकट्ठे करने का परामर्श दिया है।" 31

भोलापंथ के युवकों को महासभा के लीडर ने बताया था कि - "हमने बिहार में नोआखाली और कलकत्ते का पूरा - पूरा बदला ले लिया है, वहाँ हमने म्लेच्छों की लाशों से कुएँ भर दिये हैं, और फिर उन पर थोड़ी - थोड़ी मिट्टी डालकर उन्हें धरती में समतल कर दिया है।" और इन्हीं बातों से जोश में आकर शम्सदीन के मकान को जलाया गया। सात मुसलमानों की हत्या के बदले में निर्दोष कोचवान की हत्या को देखकर आनंद सोचता है, "डिफेंस या वीरता पूर्ण आत्मसंरक्षण वन्दनीय सही। परन्तु सात हिन्दुओं

को जीवित जला देनेवाले मुसलमानों के बदले एक अबजाण कोचवान को जीवित जला देना एक न तो वीरता है और न न्याय। नोआखाली के अत्याचारों का बदला बिहार के मुसलमानों से नहीं लिया जा सकता। अगर किसी में सामर्थ्य हो तो रावलपिण्डी और नोआखाली में जाकर "डिफेंस" करे - - - - - - "३२

** पंजाब तथा बंगाल का विभाजन लीग द्वारा स्वीकारने पर बनी स्थिति का यथार्थ चित्रण सागर जी ने किया है।-- पंजाब के विशाल मैदानों में लहलहाते हुए खेतों की खड़ी फसल को ढोर - डंगर बड़े मजे से खा रहे थे, उन्हें इन हरकतों से रोकनेवाला कोई न था, और न कोई इस खेती को काटनेवाला ही था, इन खेतों की रक्षा करने वाले इन्सान आज अर्ध - नग्न हालत में छोटी - छोटी टोलियाँ बनाये थे - सरोसामानी की हालत में, बरसते पानी और कड़कती धूपों में कहीं पनाह ढूंढने के लिए इन विशाल मैदानों में इधर से उधर परेशान फिर रहे थे, इन्सान इन्सान से पनाह ढूँढने के लिए पंजाब के एक सिरेसे दूसरे सिरे - तक दौड़ लगाते फिर रहे थे। उनके पाँव छलनी हो गये थे, उनका सामान अग्नि अग्नि - देव या लुटेरों की भेंट चढ़ गया था, कपड़े इस दौड़ - भाग में फट गये थे, उनकी आधी के करीब औरतों ने आत्म - हत्या कर ली थी और जो बाकी थीं, वे कुछ इसतरह सहम गयी थीं कि उन्हें अब अपने पुरुषों पर भी विश्वास न रहा था। जो मर्द अपने गाँव की हर लड़की को अपनी बेटी समझा करते थे, जो पुरुष बाजारों में बड़े सम्मान में उनके लिए रास्ता छोड़ दिया करते थे और जिनके पुरखाओं ने उनकी माताओं और दादियों की लाज की सदा रक्षा की थी, उन्हीं पुरुषों ने आज उनके साथ वह कुछ किया था कि अब वे हर पुरुष से भयभीत होने लगी थीं। स्वयं अपने भाइयों और पतियों के चेहरों पर भी उन्हें कुछ इस प्रकार की बर्बरता और वहशत की मुद्रा अंकित दीखने लगी थी जैसे वे भी उनकी छातियों का माँस कच्चा ही खा जायेंगे - - - १३३

यशपाल जी ने भी "झूठा - सच" में इस स्थिति को सजीवता से उभारा है। - "सियासत" तथा "वैरोकार" दोनों समाचार पत्रों का अभिप्राय था कि कांग्रेस विभाजन का सिद्धान्त स्वीकार कर लेने के लिये तैयार है, परन्तु वह पूरा पंजाब और बंगाल पाकिस्तान में दे देने के लिये तैयार नहीं है। केवल पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल, जहाँ पूरे - प्रदेशों में मुस्लिम जनसंख्या

का अधिकांश है, पाकिस्तान में दिये जा सकते हैं। युक्त प्रान्त का अथवा अन्य किसी भी प्रान्त का कोई भाग, जहाँ पूरे प्रदेश में हिन्दू - बहुसंख्या में हैं, पाकिस्तान को नहीं दिया जा सकता। "सिमरात" में मुस्लिम - लीग की ओर से कायदे आजम जिन्ना का बयान प्रान्तों के बँटवारे के, विरोध में और पूरे बंगाल तथा दोनों ~~पंजाब~~/ पंजाब प्रान्तों को मिला सकने - वाली गली के रूप में एक भू - भाग की माँग के लिए भी था।

एटली के १६ फरवरी के स्टेटमेन्ट पर चर्चा करते कालीचरण और पूरी कहते हैं - "एटली ने फैसला दे दिया है कि जून १९४८ में जिस प्रान्त में जिस राजनैतिक दल का मंत्रि-मण्डल होगा, उस प्रान्त का शासन उसी राजनैतिक दल को सौंप दिया जायेगा। पंजाब के गवर्नर की चाल स्पष्ट है कि यहाँ जून ४८ तक किसी भी दल का शासन कायम न होने दे। एटली की घोषणा के अनुसार पंजाब को संभालने की जिम्मेदारी खुद अँग्रेजों के सिर रहेगी।" ३४

डॉ. प्राणनाथ के यहाँ हुई चर्चा के बारे में काली पुरी से कहता है, डॉ. नाथ कह रहा था, ब्रिटिश ब्यूरोक्रेट, एटली और माउंटबेटन की स्कीम से खुश नहीं हैं। वे दिखा रहे हैं कि हिन्दुस्तान को सेल्फ गवर्नमेन्ट देना मुश्किल है। अँग्रेज खूब जानते हैं, पार्टीशन से दोनों भाग लँगड़े हो जायेंगे? अब तक तो देश का विकास इकाई के तौर पर हुआ है। अब पाकिस्तान इण्डस्ट्रियल गुड्स (औद्योगिक सामान) के लिए तरसेगा, शेष भाग कच्चे माल के लिए। बड़ा ब्लैकर मूव (गहरी चाल) है। पश्चिम पंजाब की रुई, दूसरी पैदावार और पूर्वी बंगाल का जूट कहाँ जायेंगे, ब्रिटेन में न? इससे उनके मरते उद्योग जरा जिन्दा हो सकेंगे।" पुरी ने कहा, "लेकिन पार्टीशन का सिद्धान्त तो मंजूर हो ही गया।" तो काली ने कहा, "प्रोफेसर प्राण कह रहा था कि अब भी दोनों आटो - नोमस (स्वायत्त) होकर भी फेडरेशन (सम्मिलित संघ) में रहें तो अधिक हानि नहीं होगी, लेकिन स्वयं एटलि की नीति लीग को सेपरेशन के लिए प्रोत्साहन दे रही है। अँग्रेज बँटवारे की जिम्मेवारी इसीलिए ले रहे हैं कि अपने हित के अनुकूल बँटवारा कर सकें।" ३५ इसतरह लेखक ने, यहाँ पुरी तथा काली की बातचीत से ब्रिटिश नौकरशाही के षड्यन्त्र को स्पष्ट किया है।

आगे यशपाल जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि, जून के पहले सप्ताह में मुस्लिम - लीग ने पाकिस्तान की स्थापना के लिए बंगाल और पंजाब को हिन्दू - बहुल और मुस्लिम-बहुल भागों में बाँट देने की शर्त स्वीकार कर ली। इस प्रकट समझौते ने और भी विकट संघर्ष को जन्म दे दिया। साधारणत: पश्चिमी पंजाब के मुस्लिम-बहुल और पूर्वी पंजाब के हिन्दू - बहुल होने पर भी पश्चिमी पंजाब में लायलपुर, मिंटगुमरी, शेखपुरा के नहरी उपनिवेशों में सिक्ख किसानों की बहुसंख्या थी और पूर्वी पंजाब के जालंधर, लुधियाना, अमृतसर आदि नगरों में मजदूरों और कारीगरों के मुसलमान होने के कारण, मुसलमानों की संख्या अधिक थी। मुस्लिम - लीग लाहौर से पूर्व में बहुत दूर तक का भाग पाकिस्तान में चाहती थी और कांग्रेस अथवा हिन्दू आधे पंजाब से दूर पश्चिम की ओर हिन्दुस्तान की सीमा बनाना चाहते थे। लाहौर के लगभग "बीचो - बीच होने के कारण उस पर दोनों का दावा था। लाहौर के लोगों का अनुमान था कि, बँटवारे की सीमा लाहौर के आसपास होगी॥ लाहौर पाकिस्तान में जायेगा या हिन्दुस्तान में यह अनुमान और विवाद का विषय बन गया था। एटलि की इस घोषणा ने दंगों की धीमे - धीमे सुलगती चली आती आग को एक बार फिर भड़का दिया। "कृष्ण नगर" और "देवनगर" समीप"राजगढ़" की मुस्लिम बस्ती पर रात में आक्रमण हो गया। एक सौ के करीब आदमी मारे गये और बड़ी संख्या में मुसलमानों के घर जलकर राख हो गये। मुसलमानों में आतंक बढ़ गया। मुसलमान बड़ी संख्या में लाहौर छोड़कर भागने लगे॥

रेडक्लिफ कमेटी ने लाहौर के उत्तर और दक्षिण में हिन्दुस्तान - पाकिस्तान में बँटवारे की सीमा निश्चित कर दी थी॥ लाहौर का प्रश्न अब भी तय नहीं हुआ था, परन्तु रावी पार कर जिला शेखपुरा पाकिस्तान का भाग घोषित हो गया था। पेशावर से शेखपुरा तक के बहुत से हिन्दु व्यापारी भागे चले आ रहे थे। इन रक्षार्थियों के लिये एबट रोड पर रायबहादुर बद्रीदास की कोठी में, शहालमी के बाहर रतनलाल के तालाब पर, मेलाराम के शिवालय में, कीले के पास गुरुद्वारा शहीदगंज में कैंप बना दिये गये थे। इन कैम्पों की स्थिति के बारे में रतन कहता है, "मुसलमान पुलिस खुल कर मुसलमानों का साथ दे रही है। पश्चिम से रोज डेढ़ - दो सौ

आदमी उजड कर चला आ रहा है। बागवान पुरा के मुस्लिम रिफ-यूजी कैम्प में दो हजार आदमी मर गया है। वहाँ बदबू के मारे साँस लेना मुश्किल है।"३६

११ तारीख के अखबार में खबर थी कि, " "लार्ड माउंटबैटन कल सुबह करांची जाकर दस बजे पाकिस्तान सरकार को शासन सत्ता सौंप देंगे। १४ अगस्त रात के बारह बजने पर पाकिस्तान के गवर्नर जनरल कायदे आजम जिन्ना हो जायेंगे। दिल्ली में रात के बारह बजने पर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में भारत की कॉन्स्टीट्यूएन्ट असेम्बली शासन-सत्ता सँभाल लेगी।" और उसी अखबार में यह भी खबर थी कि, "गाडी में एक भी जीवित व्यक्ति शेष न होने के कारण गाड़ी लाहौर स्टेशनपर रोक दी गयी। अनुमान किया जाता है, शाहदरा स्टेशन पर एक हजार से अधिक हिन्दू स्त्री, - पुरुषों और बच्चों की हत्या हुई है। गाडी को लाशों से भर कर शाहदरा स्टेशन से लाहौर की ओर भेज दिया गया। लाशों से भरी गाड़ी के पूर्व की ओर जाने के दुष्परिणाम का विचार कर अधिकारियों ने गाडी को लाहौर में स्थगित कर दिया। - - - ११ अगस्त की रात लाहौर में बहुत अधिक स्थानों पर आग लगाई जाने और हिन्दुओं के सामूहिक रूप से लाहौर छोड़ने के भी समाचार थे। ३७

"तमस" में भी साहनी जी ने विभाजन पूर्व की इसी स्थिति को स्पष्ट किया है। - " शहर में फिसाद होने के बाद एक लहर - सी चल पड़ी थी, जिस इलाके में मुसलमानों की अकसरियत थी, वहाँ से हिन्दू - सिख निकलने लगे थे, और जिन इलाकों में हिन्दू-सिखों की अकसरियत थी, वहाँ से मुसलमान घर - बार बेचकर निकल जाना चाहते थे। दो रिफ-यूजी कैम्प खुलने जा रहे हैं जिनमें २० गाँवों से आनेवाले लोग ठहराये जायेंगे; कन्टोनमेन्ट और शहर के दो सरकारी अस्पतालों में न केवल जख्मियों को भरती किया जाने लगा था, बल्कि मुर्दे भी उठा - उठाकर इकट्ठा किये जाने लगे थे। इन कैम्पों के बारे में रिचर्ड कहता है, " रिफ-यूजी कैम्पों में हम चाहेंगे कि पब्लिक संस्थाएँ सरकार को/ससोम सहयोग दें। राशन की सप्लाई का इन्तजाम कर दिया गया है; टेण्ट लगा दिये गये हैं। हमें कुछ डॉक्टरों की जरुरत होगी, बहुत से वालण्टियरों की भी जो रिफ-यूजियों की देखभाल में मदद दे सकें।" ३८

SHRI. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY. KOLHAPUR.

* विभाजन के तुरन्त बाद तो कत्लेआम, हत्या और बेशर्मी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी साम्प्रदायिक वैर का बदला लेने के बहाने लोग अनैतिक व्यवहार करने पर उतारू हो गए थे। विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के निराकरण के प्रयास किए थे। शरणार्थी कैम्पों की स्थापना द्वारा, निराश्रित हो गए लोगों को आश्रय दिया तथा मुफ्त भोजन बाटने की व्यवस्था भी की तथापि समस्या इतनी विकराल रूप लिए हुई थी कि कई वर्षोंतक उसका प्रभाव देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर पड़ा रहा। आबादी का सन्तुलन बिगड़ गया था। यहाँ तक कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने तो पाकिस्तान क्षेत्र से आनेवाले लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी थी। अत: भागे हुए लोग दिल्ली में ही प्रविष्ट हो गए॥ - - - - - जिन नगरों की आबादी बहुत कम थी वे भी घने बस गए थे उनके रहने के लिये सरकार को सूने स्थानों में छोटे - छोटे मकान भी बनाने पड़े थे।

लोग मस्जिदों, मकबरों और खंडहरों में आश्रय पाने की दृष्टि से पहुँच गए थे, भागने और जान बचाने के प्रयत्नों में परिवार भिन्न - भिन्न हो गए थे। अत: ऐसे भटके हुए और असहाय लोगों को आश्रय देने के लिये सुविधानुसार "शरणार्थी कैम्प" बना दिये गये थे, "केवल स्त्रियों के लिये" कैम्पों की भी व्यवस्था की गयी थी। उनके परिवारों के सदस्य बिछुड़ गये थे अत: उनको मिला देने के लिए आकाशवाणी से नाम, पते सहित विवरण प्रसारित करने की व्यवस्था भी सरकार को करनी पड़ी। विभाजन के कारण स्त्रियों के लिए एक नई समस्या खड़ी हो गयी थी। वे स्त्रियाँ जो अपने परिवार से बिछुड़ गयी थी पता पा जाने पर भी अपने परिवारों द्वारा इस तर्क के आधार पर स्वीकार नहीं की गयीं कि वे धर्म भ्रष्ट हो चुकी हैं। ऐसी अनेक विवश स्त्रियों ने उसवक्त आत्महत्याएँ कर ली थीं। लोगों का विशेष रूप से निम्न एवं मध्यम वर्ग का सामान्य जीवन अस्तव्यस्त हो गया था॥ उनके लिए उदरपूर्ति भी एक समस्या हो गयी थी। हर चीज पर ~~रा शि~~ राशनिंग था बड़ी कठिनाई से मील - मील लम्बी लाइन में घंटों खड़े रहकर आवश्यकता की चीजें प्राप्त होती थीं।

** शरणार्थी समस्या :-

विभाजन के बाद की बिगड़ी हुई स्थिति को सागरजी ने "और इन्सान मर गया" में बड़ी यथार्थता से चित्रित किया है। १४ और १५ अगस्त की

दम्यानी रात को, भारत वर्ष को इण्डिया और पाकिस्तान नाम के दो टुकडों में बाँट देने के बाद दोनों राजधानियों में जिस समय आजादी के उत्सव मनाये जा रहे थे, उस समय आनंद ने पंजाब में इन्सान और इन्सान के बीच हर प्रकार के सम्बन्ध को भी टुकड़े - टुकड़े होते देखा था उन टुकड़ों को एक ऐतिहासिक अग्निकाण्ड में जलते। रात के बारह बजे "कॉन्स्टिच्युएन्ट असेम्बली" में रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट की गयी "इन्कलाब जिन्दाबाद", "जय हिन्द" और पाकिस्तान जिन्दाबाद" की आवो जब वायु - तरंगों के कन्धों पर सवार पंजाब के आकाश में से गुजरह तो लाहौर और उसके सौंदर्य को भस्म कर देनेवाली ज्वालाओं ने आकाश में आ - आकर उन पर अँगलियाँ उठायी", थू - थू करके जलते हुए आलिशान मकानों ने कड़कड़ाकर गिरते - गिरते एक व्यंगयपूर्ण कहकहा लगाया, और कई सवाल पूछते हुए उन मस्ताने नारों के पीछे -पीछे वायुमण्डल में ठोंकरे खाने लगे ।[३९]

उन ऐतिहासिक तारीखों को भूल सकना उसके बस में न था - अगस्त के दूसरे हफ्ते में ही पंजाब की हालत फिर बिगड़ गयी थी; और अमृतसर, पटियाला लुधियाना इत्यादि के इलाकों से भी बेहद अफसोसनाक खबरें आनी शुरू हो गयी थीं। यहाँ तक कि १४ अगस्त को सवेरे मुसलमान शरणार्थियों की पहली गाड़ी अमृतसर से लाहौर पहुँची उस दिन स्टेशनपर बहुत-से स्वयंसेवक शरणार्थियों को लेने के लिए पहले से प्रतीक्षा में खड़े थे, उन्हें देखकर और भी बहुत-से लोग तमाशा देखने के विचार से इकट्ठे हो गये। गाड़ी के आते ही किसी स्वयंसेवक ने ऊँची आवाज में पुकारा -- "पाकिस्तान" जिसके उत्तर में सारे जनसमूह ने एक स्वर होकर नारा लगाया--"जिन्दाबाद"। स्टेशन "अल्लाहो-अकबर" और "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारों से गूँज उठा, किन्तु गाड़ी में से किसी ने भी उनके नारों का जवाब नहीं दिया।

बहुत-से डब्बों के अन्दर फर्श पर खून ही खून था, और उसमें कई शरणार्थी एक दूसरे के ऊपर ही गिरे पड़े थे बहुत-से इसीतरह पड़े-पड़े मर चुके थे, कुछ ऐसे घायल भी थे, जिनके अंगों में किंचित् भी सामर्थ्य शेष न थी, :, परन्तु जिनके नेत्रों में शायद अभी दृष्टि बाकी थी। इनके अतिरिक्त कुछ लोग पहली सीटों पर बैठे अन्दर आनेवालों की ओर चुपचाप देखे जा रहे थे। वे जीवित थे, परन्तु शायद उन्हें अभी इस बात पर विश्वास नहीं- हो रहा था या वे इन

लोगों को भी उन सिखों और हिन्दुओं के साथी समझ रहे थे, जिन्होंने रास्ते में गाड़ी रोककर उनके डब्बों को मानवता के किटाणुओं से साफ करने की चेष्टा की थी।[४०]

एक डब्बे की दीवार पर किसी ने लहू से लिख दिया था -"रावलपिंडी का जवाब, और डब्बे पर छाया हुआ मृत्यु - मानों जैसे एक डरावनी मूक भाषा में पुकार - पुकार कर कह रहा था कि इनको रोको - जो नोआखाली का जवाब बिहार में और बिहार का जवाब रावलपिंडी में देते हैं। भगवान के लिए कोई उन्हें समझाओ - - - - - - - - - उस दिन बारह बजे से पहले - पहले रेलवे-स्टेशन पर इस कौमी जेहाद के खातिर चार सौ से अधिक हिन्दुओं को अपना रक्त भेंट करना पड़ा॥ और उसके बाद लाहौरवाले इतिहास के बड़े - से - बड़े कत्लेआम की रिकार्ड मात करने की सफल कोशिश में लगे रहे। उन चार दिनों में वहाँ सूरज दिखायी नहीं दिया। शहर के कोने - कोने में भड़कती हुई आग के धुएँ से क्षितिज से क्षितिज तक सारा आकाश भर गया था। उधर की ओर देखने की कोशिश करते ही आँखों में जलता हुआ बुरा - सा पड़ने लगता। यहाँ तक कि इन सर्दियों में भी कोई आदमी रात को छत पर नहीं सो सकता था, क्योंकि सवेरा होते होते वायुमण्डल में उड़ती हुई स्याह राख से बिस्तर भर जाता था।[४१]

इसवक्त की पंजाब की की, स्थिति को चित्रित करते हुए लेखक ने लिखा है, पंजाब के वह जवान गाँव, जिनके खेतों में जवानी लहराती रहती थी, जिनके कुओं से पानी निकालनेवाले बैल वहाँ के छैले युवकों की मधुर - मधुर वंशलियों की ताल पर अपने पैरों में बंधे हुए घुँघरू बजाते हुए चला करते थे, और जहाँ वायु - मण्डल में वारसशाह के लिखे हुए उस महाकाव्य "हीर" के पद कुछ इसप्रकार तड़पा करते थे कि उन्हें सुनकर बूढ़ों की रगों में युवा के सारे प्रणय फिर से जाग उठते और रोटी लेकर खेतों को जाती हुई युवतियों के सीनों में नयी - नयी उमंगें धक - धक करने लग जातीं - उन्हीं गाँवों पर आज श्मशान की - सी मुर्दनी छायी हुई थी। यों दिखायी देता था कि किसी अनदेखी जालिम शक्ति ने उन हँसते-गाते गाँवों को उजाड़कर वहाँ मरघट और कब्रिस्तान आबाद कर दिये थे। वहाँ की वायु में मरनेवालों

की : चीखें और बचनेवालों की आहें भटकती फिर रही थीं और धरती पर मरनेवालों का रक्त और बचेनेवालों के अश्रु - - - - - -।[42]

हर गाँव में, और हर चेहरे पर वहशत बरस रही थी - रास्तों और खेतों में पड़ी हुई लाशों के चेहरे पर भी उसी वहशत की मुद्रा अंकित थी जो उनके चेहरों पर मौजूद थी, जिन्होंने केवल इसलिए उनका वध कर डाला था कि उनका धर्म अलग था। जिन औरतों और लड़कियों को वह जबर्दस्ती उठा लाये थे, उनकी निगाहों में भी यही आतंक और दहशत मौजूद थी, जो उनकी अपनी माताओं और बहिनों की निगाहों में थीं, - वहशत ने उन सब में कोई अन्तर न छोड़ा था, प्रत्येक की पवित्रता बर्बाद हो चुकी दिखायी देती थी।[43]

लेखक ने मौलाना के कथन से विभाजन के बाद की पूर्वी पंजाब की स्थिति को चित्रित किया है। - वहाँ किस प्रकार मुसलमानों का कत्लेआम हुआ, किस प्रकार राशन के दफ्तरों से एक - एक मुसलमानों के नाम की सूची बनाकर बड़े क्रमानुसार एक एक को ढूँढकर कत्ल करने की कोशिश की गई। पूर्वी पंजाब के बड़े - बड़े शहरों की बड़ी - बड़ी सड़कों पर स्थायी ढंग की चितायें तैयार की गई थीं, जिनमें हर राह चलते मुसलमान की आहुति दी जाती थी, और बड़े - बड़े चौकों में जलती हुई उन चिताओं में जीवित मनुष्यों को झोंक कर हिन्दू और सिख किसप्रकार खुशी से नाचा करते थे।

मौलाना ने शरणार्थियों को ले जानेवाली उस रिफ-यूजी ट्रेन का भी वर्णन किया जिसमें सफर करते हुए आठ हजार हिन्दुओं को लाहौर से आगे निकलते ही बिल्कुल "साफ" कर दिया गया था। वह ट्रेन जब अमृतसर पहुँची तो लोगों ने उसे वहाँ ठहराने से इन्कार कर दिया। वह कहने लगे कि "इस दिल्ली ले जाओ और हमारे अहिंसा के पुजारी नेताओं को दिखाओ।" यहाँ तक कि उसे सचमुच दिल्ली ले जाया गया। उस गाडी में लहू और लाशों के सिवा कुछ न था। स्त्रियों के मृत शरीर नंगे करके डिब्बों के बाहर लटका दिये गए थे, उनकी छातियों पर पाकिस्तान लिखा हुआ था और उनकी योनियों में लकड़ियाँ ठोंस दी गई थीं।

जब प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को उसे देखने के लिये लाया गया तो वह यह दृश्य देखकर बच्चों की भाँति रोने लगे। लोगों ने महात्मा गांधी को भी मजबूर कर दिया और वह भी आए। परन्तु बड़े - सब्र और शांति के साथ इतना कहकर चले कि, "यह देखो हिंसा का क्या परिणाम होता है।" और फिर उस गाड़ी के प्रत्युत्तर में कई मुस्लिम गाड़ियों के साथ पूर्वी पंजाब में जो कुछ किया गया वह भी कम भयानक न था। उनमें से एक गाड़ी में तेरह हजार इनसानों में से केवल पन्द्रह बचे थे। और वह भी लाशों के नीचे दब जाने के कारण उन पन्द्रहों ने बेहद भूख और प्यास के कारण फर्श पर जमे हुए अपने भाइयों, पत्नियों और बच्चों के लहू को चाटा था, अपने शरीर में दाँत काटकर लहू से सूखे गले को सान्त्वना देने की चेष्टा की थी।[४४]

पंडित जी ने इन बढ़ते फसादों के बारे में ९ सितम्बर को रेडियोपर कहा थी कि, - "आज जब मैं महात्मा गांधी के सामने गया तो मैं उनसे आँखें चार नहीं कर सकता था। लज्जा के मारे मेरी गर्दन झुकी हुई थी। वह महान मानव - हमारा गुरू आज क्या सोचता होगा ? क्या जीवन भर वह हमें इसीलिए उपदेश देता रहा की, हम यह "कारनामें" करें जो अब हो रहे हैं ? जब मैं इन"कारनामों" का विचार भी करता हूँ तो भय और आतंक के मारे जैसे मैं अपना ही रक्त चूसने लग जाता हूँ - और आजकल रक्त ही तो रह गया है ~~आ~~ हमारे पीने को . . . . . . इन हजारों लाखों मौतों से भी बदतर है वह तिरस्कार अपमान और शर्मिन्दगी जो अब कई पीढ़ियों तक हमारे नाम हमारे देश के साथ चिपकी रहे गी . . . . .इतने कई सालों से जो स्वप्न हम देखते आ रहे थे क्या उनका फल यही था ? एक पूरी नसल ने जो काम अपने सारे जीवन भर में कर पाया था क्या वह तबाह हो जायेगा . . . . . . दूसरी ओर जो कुछ हुआ वह सुनकर हमें भी जोश आता है, मुझे क्रोध भी आता है परन्तु फिर मैं सोचता हूँ कि जो मैं करने लागा हूँ उसका परिणाम क्या होगा। क्या हम लुटेरों का देश बनाना चाहते है ? स्त्रियों और मासूम बालकों के लहू में लिथड़े हुए हाथों में लूट मार का सामान लिये हुए फिसादियों के दल जब मुझे देखकर ~~नारा~~ "जवाहरलाल की जय" और "महात्मा गांधी की जय"

के नारे लगाते हैं तो मैं विस्मित सा सोचने लगता हूँ की क्या मैं लुटेरों और डाकुओं का सरदार हूँ ?

मेरे भाइयो - याद रखो कि देश पागल पने से नहीं बनते और न पागल आदमी ही देशों को बनाते हैं। हम इस समय केवल लाखो करोडों इनसानों की जिंदगियों से ही नहीं, खेल रहे बल्कि एक कौम एक जाति और एक देश के जीवन से खेल रहे हैं, अपने भविष्य से खेल रहे हैं। समझों और सँभलो !!" ४५

इन भयानक दंगों के साथ - साथ लेखक ने उस कारिंदे का भी यथार्थ - चित्रण किया है जिसमें से हिन्दू, पाकिस्तान से हिन्दुस्तान की ओर चले जा रहे थे। यह कारिंदा साठ मील लम्बा था, जिसके साथ उपन्यास का नायक आनंद चार दिनों से चिपट रहा था। किसी को किसी दूसरे का खयाल तक न था। किसी विशाल समुद्र तट - पर इकट्ठे हो गए कंकरों की तरह वह सब एक दूसरे से जुदा थे। दिन भर लोग इस भीड़ में एक दूसरे के कधों से कन्धे टकराते रेंगते रहते। और रात पड़ने पर भी उसी तरह एक दूसरे में गडमड लोकर लेट जाते - यहाँ "जीवित इन्सान" एक दूसरे के साथ चलते हुए भी मानों एक दूसरे से हजारों मील दूर - दूर थे, मानों उनका एक - दूसरे से कोई रिश्ता न था, कोई सम्बन्ध न था, जन्म के, जाति के या देश के नाते मानों हर कदम पर रास्ते की धूल की तरह उड़ते और चिमटते चले जा रहे थे। ४६ कारिंदे का वह दृश्य दिल को झकझोर देने वाला था जिस वक्त हवाई जहाज से कारिंदे पर रोटियाँ फेंकी गयीं - लोग रो रहे थे, लोग चिल्ला रहे थे, एक दूसरे को मार रहे थे, एक दूसरे से रोटी के छोटे - छोटे टुकडे छीन रहे थे, एक दूसरे को पैरों तले रौंद रहे थे . . . . . लेखक ने कहा है, यहाँ आकर जैसे मानवता नंगी हो गई थी, धर्म की पोल खुल गयी थी और इन्सान अपने असली रंग में प्रकट हो गया था। उसने आज हजारों लाखों बरसों की परंपराओं के जोर पर बने हुए तमाम नाते तोड़ दिये थे, और अब जैसे वह बिलकुल स्वतंत्र हो गया था - ! ४७

विभाजन बाद नारी की स्थिति को भी सागरजी ने आलोच्य उपन्यास में बड़े यथार्थ रूप में चित्रित किया है। । - लेखक ने शरणार्थी कैम्प में स्थित निर्मला की अवस्था द्वारा यह चित्रित किया है कि, विभाजन के बाद नारी की इज्जत लूटना, अपहरण करना आदि बड़े जोरों पर हुआ था, पर कुछ समय के उपरान्त सरकार की सहायता से या स्वयं ही जूझकर, अनेक यातनाओं को सहकर वे बड़ी आशा लेकर जब घर वापस लौटती हैं तो उन्हें घर में जगह नहीं मिलती थी। परिवारवालों का यह रुख देखकर अन्त में मजबूर होकर उन्हें आत्महत्या करना पड़ता था। निर्मला भी इन्हीं में से एक थी, जिसे उनके गाँव से मुसलमान उठाकर ले गये थे। पर कुछ ही दिनों में उसे उसकी ममता वापस खींच लायी, पर उसवक्त उसके पति तथा ससुरने उसे घर में रहने नहीं दिया। ससुर ने कहा - "पागल हो गयी है बेचारी - " . . . . . उसके पति ने कहा - "पागल तो है ही, नहीं तो इसतरह यहाँ न चली आती।" . . . . . जब निर्मला ने कहा कि, "हे राम! कितना घोर अन्याय है!।" तो उसके ससुर ने कहा, "अन्याय नहीं, संसार का व्योहार ही ऐसा है। इज्जत - आबरू के बिना यहाँ कोई जीवित नहीं रह सकता।" ४८

घर से निकालते हुए उसके ससुर ने उसे शाबाशी दी कि तुमने यह बड़ी बुद्धिमत्ता दिखायी कि रात के अंधेरे में आई हो नहीं तो इतने बड़े घराने की लाज मिट्ठी में मिल जाती। इन सबसे तंग आकर निर्मला ने आत्महत्या करना चाही, पर वहाँ भी उसे असफलता मिली अन्त में उसे शरणार्थी कैम्प की शरण लेनी पड़ी ॥

"झूठा - सच" में यशपाल जी ने १४ तथा १५ अगस्त की दरमियानी रात को जब स्वतंत्रता तथा विभाजन की घोषणा की गयी उसवक्त का चित्रण करते हुए प्रथम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा पं. नेहरू जी के भाषणों का कुछ ब्योरा दिया है। "पन्द्रह अगस्त जिन्दाबाद!", "भारत माता की जय"!, महात्मा गांधी की जय!", "नेताजी जिन्दाबाद-!", इन्कलाब जिन्दाबाद! भगतसिंह जिन्दाबाद! आदि नारों के चित्रण से तो इस स्थिति में अत्यन्त सजीवता आ गयी है। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने विभाजन से उत्पन्न हुई तनावपूर्ण स्थिति को चित्रित किया है। - १५, १६, १७ अगस्त को लाहौर

से आनेवाले उर्दू और अँग्रेजी समाचार - पत्र नहीं आये। देहली से आनेवाले उर्दू और अँग्रेजी समाचार-पत्र नहीं आये। देहली से आनेवाले पत्रों में समाचार थे, अमृतसर और लाहौर के बीच रेलगाडी का आना-जाना बंद हो गया था। केवल सैनिकों की सुरक्षा में ही सवारी की बसें सड़कों के रास्ते आ - जा रही थीं। इन अधूरे समाचारों से लोगों की स्थिति और भी भयग्रस्त बन चुकी थी।

२० अगस्त के अखबार में - पाकिस्तानी सेना और पुलिस ने लाहौर के "रंगमहल", "लोहे का तालाब" समीप की गलियों और "ग्वाल मण्डी," "पुरानी अनारकली" में शेष रहे हिन्दुओं को अपने घरों से हटाकर सुरक्षा के लिये/डी०ए०वी० डी.ए.वी. कॉलेज की इमारतों में बना दिये गये कैम्पों में इकट्ठा कर दिया था। गुजरांवाला और लायलपुर में भी सब हिन्दुओं को कैम्पों में इकट्ठा कर देने और उपद्रवियों द्वारा बाजारों को लूटने, हिन्दू स्त्रियों को निरावरण करके उनके जुलूस निकाले जाने के भी समाचार थे।[४९]

उपन्यास का नायक पुरी उसवक्त नैनीताल में था अत: अपने परिवार का पता लगाने वह लाहौर जाने के लिये पश्चिम जानेवाली डाक गाड़ी में बैठा। डिब्बे में बहुत भीड़ थी। डिब्बे में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मौजूद थे। हर स्टेशन पर भीड़, हरी ही भीड़ डिब्बे में घुसने का यत्न करती। अम्बाला स्टेशन पर इतनी भीड़ गाड़ी की ओर लपकी कि भीतर बैठे सभी लोग घबरा गये। प्लेटफार्म पर गाड़ी के भीतर आना चाहनेवाली भीड़ ऐसी आतुर और आतंकित थी जैसी उसी गाड़ी में चढ़ जाने से वे निश्चय ही मृत्यु के मुँह में चले जायेंगे। लोग गाड़ी के दरवाजों के साथ डण्डे पकड़कर पाँवदान की पटरियों पर खड़े चल रहे थे। सरहिन्द स्टेशन से कुछ ही दूरी पर जाने के बाद गाड़ी रुक गयी। बहुत समीप बन्दूके चलने के धमाके के साथ गाड़ी की काठ की दीवारों पर गोलियों की चोटों की आहटें हुईं। तारों के पीछे बस्ती में से बर्छे, फर्से, तलवारें और बन्दूकें लिये भीड़ गाडी की ओर झपट पड़ी गाड़ी पर गोलियाँ पड़ रही थीं। पुरी के समीप खिड़की में बैठा प्रौढ चीख उठा। उसके कंधे से खून बह रहा था - "हाय मार डाला", हाय - हाय और चीख पुकार से गाड़ी भर गयी।[५०]

आक्रमण करनेवाले गाड़ी के पाँवदानों पर चढ़कर खुले दरवाजे और खिड़कियों से बर्छे और फर्से उभारते मसे फलाने लगे और सामने पड़नेवालों को पकड़ - पकड़कर बाहर खींच कर गिराने लगे। . . . . . . तीन जवान, दो तलवारें और एक बर्छी लिये भीतर आ गये। बर्छे या तलवार का एक वार और गाड़ी से बाहर धक्का। सवारियों के साथ असबाब की गठरियाँ और बक्स भी फेंके जा रहे थे। आस - पास से गोलियाँ भी दग रही थीं। एक - साथ बैठी एक जवान और प्रौढ़ा स्त्री बहुत जोर से चीखकर एक - दूसरी से लिपट गयी थी। बर्छा हाथों में लिये आदमी ने उस जवान स्त्री के दुपट्टे में से केसों को पकड़कर उसे दरवाजे की ओर लुढ़का दिया और लात के धक्के से नीचे गिरा दिया। और बर्छा दोनों हाथ उठाये भय से रंभाती हुई बुढ़िया के खुले मुँह और गले को फाड़ कर उठ गया। आधी गाडी खाली हो गयी थी। पुरी के साथ यात्रा करते सिक्ख की पुकार सुनाई दी - "भाइयों - "मैं सिक्ख और यह हिन्दू भाई हैं।" पुरी भी चिल्लाया - "मैं हिन्दू ।. मैं हिन्दू।" लुधियाना स्टेशनपर गाडी को रोका गया। - "सब लोग गाडी से दो मिनट में उत्तर जायें। आगे लाइन पर खतरा है। . . . . सवारियों को स्टेशन के बाहर जाने की इजाजत नहीं है। सवारियों को हिफाजत के लिये मुस्लिम - पनाहगुजी कैम्पर में जाना होगा।"[५१]

पुरी लुधियाना के सारे कैम्पों-कैम्पों में अपने परिवार को ढूँढता फिरा पर कहीं उनका पता न मिला। वह कालेज की एक ओर इमारत के बरामदे में जहाँ कई लोगों ने डेरा जमा लिया था अपना बिस्तर रखा। उसी दिन रात को खाना खाने जाते वक्त पुरी को हिन्दुओं ने ही लूटा। चार दिन तक पुरी वैसा ही भूखा भटकता रहा। वह भूख और सिर दर्द से विवश हो गया था। आखिर पुरी मुफ्त राशन बाँटनेवाले स्थान का पता लेकर उसी ओर चल दिया - "पाँव भर आटा और छटाँक भर दाल बाँटनेवाला खद्दरधारी व्यक्ति सामने खड़ी भीड़ को बार - बार धैर्य से काम लेने के लिए कह कर चेतावनी दे रहा था - "भाइयों, अपना धर्म - ईमान समझ कोई दो बार न ले। कोई - भाई - बहिन खाली हाथ रहेगा तो दो बार देने वाले को पाप होगा।"[५२] जयदेव पुरी शरणार्थियों को मुफ्त राशन बाँटनेवाले डिपो के सामने क्यू में खड़ा था।

जालन्धर में पाकिस्तान के आन्दोलन का जोर था। मुसलमानों का विश्वास था कि जालंधर पाकिस्तान में रहेगा, परन्तु बँटवारे में जालंधर भारत में आ गया। इसकारण बहुत से मुसलमान पश्चिम की ओर भागने लगे थे। १५ अगस्त १९४७ के दिन मुसलमानों ने अपने मकानों पर भारत के राष्ट्रीय झण्डे फहरा लिये। पश्चिम से आए हिन्दुओं को उनकी भारत - भक्ति नहीं सुहा रही थी। वे पश्चिम में हिन्दुओं पर अत्याचार करके बाहर निकालनेवाले सम्प्रदाय के लोगों को अपनी छाती पर कैसे बैठा रहने देते? मुस्लिम मुहल्लों पर बार - बार हमले हो रहे थे। बहादुर गढ़ मुहल्ले के सत्ताईस मुसलमान कत्ल हो गये थे। २३ अगस्त को प्रात: ही अफसर और सैनिक बहादुरगढ़ आ पहुँचे और उन्होंने मुसलमानों को फौरन ही मुहल्ला छोड़कर "मुस्लिम पनाहगुजी कैम्प" में जाने का हुक्म दिया।[५३]

इसवक्त सरकार ने भी विभाजन से उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास किया इसे लेखक ने आलोच्य उपन्यास में नेहरू जी के भाषण द्वारा स्पष्ट किया है। - "सब लोग जानते हैं, मैं भी जानता हूँ कि आप लोग बहुत तकलीफ में हैं, इसीलिए मैं आप लोगों से मिलने और आपकी हालत देखनेके लिए, यहाँ हाजिर हुआ हूँ। कुछ ऐसी राजनीतिक तबदिलियाँ हमारे मुल्क में वाकया हुयी हैं जिनके अच्छे अच्छे नतीजों के साथ - साथ बुरे नतीजे भी सामने आये हैं। यह तो आप सब लोग जानते हैं कि हम अगर अच्छे नतीजों को कबूल करते हैं तो बुरे नतीजों से भी नहीं बच सकते। वे नतीजे आपके सामने हैं। आप उन्हें देख रहे हैं, लेकिन उनकी जिम्मेदारी कांग्रेस या हमारी सरकार पर नहीं है। हालाँकि एक हद तक है और . . . . . और हम कबूल करते हैं। हम . . . . हम जिम्मेदारी से डरते नहीं हैं। हम मुसीबत में पूरी मदद करना अपना कर्म समझते हैं और - . . . . . उसके लिए हम हर मुमकिन कोशिश कर रहे हैं। आप अपनी शिकायतें और तकलीफें हमारे सामने रखें। दूसरे किस आदमी से आप अपनी तकलीफें कहेंगे? - सरकार और सरकारी अफसर आपकी तकलीफों को सुनेंगे और उन्हें दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे।

लेकिन आप को याद रखना चाहिए कि जैसा आपका यह छोटा सा कैम्प है, इससे बहुत बड़े कैम्प हमने दिल्ली में बनाये हैं। मुल्क में ऐसे सैकड़ों कैम्प हैं। हमारे कन्धों पर बहुत बड़ा बोझ है और जिम्मेवारी भी है। आपको सिर्फ अपनी जाती तकलीफों और मसलों को ही नहीं सोचना चाहिए। आज का जमाना बहुत अहम जमाना है। इस समय हमारा मुल्क और दुनिया एक बहुत अहम दौर से गुजर रहे हैं। हम पर मुल्क के हर आदमी पर बहुत बड़े - बड़े - फर्ज आयद होते हैं। हमें उनकी तरफ भी देखना है। तंग निगाह से सिर्फ अपने जाती मसलों को ही नहीं देखना चाहिए। ताहम .....
..... जयहिन्द।" ५४

"झूठा - सच" में भी यशपाल जी ने बंती के चरित्र द्वारा उसवक्त की अपहृत नारी की स्थिति का चित्रण किया है। - बंती को भी विभाजन के वक्त मुसलमानों ने अपहृत किया था, शारीरिक तथा मानसिक अनेक यातनाओं को सहकर अन्त में सरकार द्वारा किये प्रयासों से छूटकर अनेक प्रयासों के बाद जब अपने घर का पता ढूँढ निकालती है पर, घरवाले उसे अस्वीकार करते हैं। बंती घर का पता ढूँढ लेने से खुशी के मारे फूली नहीं समायी वह अपने बच्चे को देखकर "मेरे काका।" कहकर उसपर झपट पड़ी। बंती सास के साथ भीतर जाने लगी। सास ने उसे फटकार दिया - "हट जा, दूर रह! बाहर निकल।" तब बंती ने कहा, "क्यों? मेरा घर है मैं कहाँ जाऊँ?" . . . ." दूर रह, तुझसे कह दिया न। तू अब हम लोग लोगों के किस काम की।" ... .. बंती के पति ने भी आकर जो लोग उसे समझाने लगे थे उन्हें ही डाँटा और कहा, "तुम लोग कहाँ के पंच हो? तुम्हें क्या मतलब?[५५] और यह कहकर उसने दरवाजा बन्द कर दिया। अन्त में बंती ने विवश होकर दहलीज पर माथा पटक - पटक कर अपनी जान दे दी।

* इधर साम्प्रदायिक उत्तेजना ज्यों की त्यों बनी हुई थी। जहाँ पाकिस्तानी क्षेत्रों से भारतीयों को बेघरबार बनाकर निकाला जा रहा था वहाँ भारत में गाँधी जी मुसलमानों के प्रति दया और सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण अपनाए हुए थे। उन्होंने सरकार द्वारा उनकी सुरक्षा और सुख -

सुविधा की ठीक व्यवस्था न करने पर अनशन तक का सहारा लिया था इसी से हिन्दुओं में गाँधीजी के प्रति विरोध का भाव उत्पन्न हो गया था उनके प्रति घृणा उत्पन्न हो गयी थी और लोग "गाँधी गद्दार है, गाँधी मुल्क मुल्क का दुश्मन है" के नारे लगाने लगे थे। उनकी घृणा और उत्तेजना इतनी बढ़ गई थी कि उनकी हत्या के प्रयास होने लगे थे। आखिरकार ३० जनवरी १९४८ को उसी उत्तेजना के शिकार नाथूराम गोडसे नामक एक हिन्दू व्यक्ति ने गाँधी की जीवन - लीला समाप्त भी कर दी ।

** विभाजन के बाद का गाँधी जी का दृष्टिकोण :-

विभाजन के बाद साम्प्रदायिक हिंसात्मक वृत्ति देखकर उसपर गाँधी जी की प्रतिक्रिया को सागर जी ने"और इन्सान मर गया" उपन्यास में यथार्थ सजीव रूप में चित्रित किया है। - सागर जी ने गाँधी जी की विभाजन के वक्त बढ़ती हुई हिंसा को देखकर उसे रोकने के अनेक प्रयासों के बावजूद आखिर किसप्रकार निराश हो जाते हैं इस स्थिति को मौलाना द्वारा अखबार में प्रस्तुत खबरों द्वारा दिया है। - "इसमें कलकत्ता में महात्मा गाँधी की प्रार्थना सभा के पिछले कुछ उपदेशों का खुलासा एक जगह जमा किया हुआ है। यह देखों ४ सितम्बर का उनका भाषण जिसमें उन्होंने वहाँ की औरतों को अपने पास हर समय आत्महत्या के लिए जहर रखने का परामर्श दिया है। यह १० सितम्बर का भाषण , जिसमें उन्होंने अपने मरन व्रत की चर्चा की है। इसी में उन्होंने कहा है कि इसतरह सिख धर्म या हिन्दू मत या इसलाम जिन्दा नहीं रहेगा बल्कि हम सब जानवर बन जायेंगे।और यह १७ सितम्बर के भाषण का खुलासा जिसमें उन्होंने मायूस होकर कहा है कि "मैं चाहता हुआ भी इस समय आपको अहिंसा का उपदेश नहीं दे सकता।" यह आज का पैगम्बर है लेकिन वह भी आज मायूस होकर मरन - व्रत के द्वारा आत्महत्या करने पर तुल गया है।[५६]

विभाजन के बाद हुए भीषण दंगों की स्थिति को चित्रित करते हुए मौलाना ने उस रिफ्यूजी ट्रेन का वर्णन किया था जिसमें आठ हजार हिन्दुओं को कत्ल कर दिया गया था, जब इस ट्रेन को दिल्ली में नेताओं को दिखाने

के लिये लाया गया तब गाँधी जी ने बड़े तप और शांति के साथ इतना कहा, "यह देखो हिंसा का क्या परिणाम होता है।"५७

"झूठा - सच" में भी यशपाल जी ने गाँधीजी के इन्हीं विचारों तथा जनता की प्रतिक्रियायें आदि को बड़े ही यथार्थ रूप में चित्रित किया है। गाँधी जी के निरन्तर उपदेशों से भी हिन्दू-मुस्लिम विरोध के कारण रक्तपात समाप्त नहीं हो सका था। उत्तर प्रदेश और दिल्ली से मुसलमानों के प्रतिनिधि आकर दारुण अत्याचार की कहानियाँ गाँधी जी को सुना रहे थे। पश्चिमी पंजाब में सगुद्री, जेहलम, लायलपुर, बहावलपुर से समाचार आ रहे थे कि कई लाखों हिन्दू विकट यातना में पड़े हैं। भूख से मर गए हैं। - काश्मीर की भूमि पर भारतीय और पाकिस्तानी सेनाओं में युद्ध छिड़ गया है।५८

गाँधी जी कलकत्ता से पश्चिम पाकिस्तान में शान्ति - स्थापन का प्रयत्न करने के लिए आये, परन्तु दिल्ली की अवस्था देख - सुनकर उनका सिर दुःख और लज्जा से झुक गया। भारत में शान्ति स्थापित किये बिना वे पाकिस्तान को क्या कह सकते थे ? गाँधी जी ने प्रण कर लिया, दिल्ली मे पूर्ण शान्ति स्थापित किये बिना वे दिल्ली नहीं छोड़ेंगे,, उसके लिये चाहे प्राण चाहे प्राण ही दे देने पड़े। कांग्रेस सरकार ने पूरे नगर में बहुत कड़ा सैनिक नियन्त्रण लागू कर दिया था। उपद्रव की शंका होते ही उपद्रवकारियों को गोली मार देने का हुक्म दे दिया गया था। गढ़वाली और सिख पल्टनों को बदलकर दूर दक्षिण की पल्टनें दिल्ली में तैनात कर दी गयी थीं। यह सिपाही उत्तर के हिन्दू और मुसलमानों में कोई भेद न कर सकते थे। दिल्ली में गाँधी जी ने प्रार्थना - सभा में रोती हुई मुस्लिम स्त्रियों को उनकी रक्षा का आश्वासन दिया। गाँधी जी और उनके साथियों ने गीता के श्लोकों से प्रार्थना आरम्भ की। गीता के श्लोकों के पश्चात् "गुरु ग्रंथ साहब" से वाणी पढ़ी गयी। उसके पश्चात् "कुरानशरीफ" से आयतों की तलावत शुरु हुई।

"बन्द करो। गांधी मुरदाबाद। बन्द करो। बन्द करो। कुरान को बन्द करो। गांधी मुरदाबाद। कुरान नहीं पढ़ा जायेगा॥ हम नहीं पढ़ने देंगे। . . . . . गाँधी जी मौन निश्चल हो गये थे। उनका चेहरा अवस्ताद की प्रतिमा जान पड़ रहा था। उनके साथी भी मौन हो गये। गाँधी जी ने भीड़ से कहा, "भाइयों और बहनों !" गाँधी जी का सन्ताप, करुणा और आत्म - विश्वास से भरा स्वर सुनायी दिया, "इस दुख और मुसीबत में हमें भगवान पर विश्वास ही सहारा दे सकता है। ईश्वर या अल्लाह तो एक है। उसे किसी भी धर्म की पुस्तक से याद करने में क्या एतराज और क्रोध हो सकता है . . . . . " "हम कुरान की आयतें हरगिज नहीं सुनेंगे !" भीड़ में से कुछ लोगों ने क्रोध से आपत्ति की, "इन आयतों को पढ़कर हमारे हजारों भाइयों का कत्ल किया गया हैं। इन आयतों को पढ़ने वालों ने हमारी माँ - बहनों पर बलात्कार किया है। आप अहिंसा और किसी का दिल न दुखाने का उपदेश देते हैं। आप यह आयतें सुनाकर हमारे भाईयों और बच्चों के कत्ल और हमारी माँ बहनों की बेइज्जती की याद दिला रहे हैं, हमारे दिलों को दुखा रहे हैं। हम इसे हरगिज बरदाश्त नहीं करेंगे ! " . . . . गाँधीजी निर्भय स्वर में बोले, - "कुछ भाइयों को कुरान - शरीफ की आयतें पढ़ी जाने में आपत्ति हैं। मैं उनके दिल नहीं दुखाना चाहता, लेकिन अगर प्रार्थना में मैं कुरान-शरीफ की तलावत नहीं कर सकता तो प्रार्थना में दूसरी धर्म - पुस्तकों का भी पाठ नहीं करूँगा।"

"मैं अपने हिन्दू और सिख भाई - बहनों से इंसानियत के नाम पर प्रार्थना करता हूँ।" गाँधीजी भीड़के शांत हो जाने पर बोले, "दिल्ली में मौजूद सब मुसलमान भाई - बहनें हमारी और हिन्द - सरकार की अमानत हैं॥ अगर उनका रोम भी दुखता है या उनके लिये किसी किस्म का खतरा रहता है तो यह हमारा सब से बड़ा अपराध होगा, हमारे लिए निहायत शर्म की बात होगी - . . . . ।" विरोधियों ने ललकार कर कहा, "पाकिस्तान में अब भी रोज हजारों हिन्दू काटे जा रहे हैं। उन्हें लूटकर नंगा कर के निकाला जा रहा है। आपको उनका कोई

दरद नहीं है ? आप वहाँ क्यों नहीं जाते ?" गाँधी जी ने हाथ जोड़कर लोगों से कहा, - "मेरे दिल में पाकिस्तान में मारे जानेवाले और पाकिस्तान से निकाले जाने वाले अपने भाई - बहनों के लिए भी उतना ही दरद है। मैं पाकिस्तान जाना चाहता हूँ और जाऊँगा। मैं कायदे आजम के सामने हाथ जोड़कर दया और शान्ति के लिये प्रार्थना करूँगा। मैं उनसे कहूँगा की हत्या और खून को बन्द करायें, अमन कायम करायें। हिन्दू भाई बहनें फिर अपने घरों में लौटकर शान्ति से निर्भय रह सकें, लेकिन उससे पहले यह यहाँ से गये मुसलमानों का लौट आना जरूरी है॥ जब तक दिल्ली और हिन्दुस्तान में मुसलमानों के लिए खतरा मौजूद है, मैं किस मुँह से पाकिस्तान गवर्नमेन्ट पर कत्लो-खून और बदअमनी के लिए दोष लगा सकता हूँ, किस मुँह से उन्हें शांति कायम करने के लिए कह सकता हूँ ? मैं, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों जगह शान्ति और अमन कायम करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा रहा हूँ।" ९९ ५९

देश के बँटवारे के समय भारतीय सरकार को ब्रिटेन से संयुक्त देश के लिए जो पावना [असेट] मिला था, उसके पचपन करोड़ रुपया पाकिस्तान का भाग था। पाकिस्तान ने भारत के अंग काश्मीर पर अधिकार करने के लिए आक्रमण कर दिया था। युद्ध की घोषणा नहीं की थी, परन्तु दोनों ओर की सेनाओं में युद्ध चल रहा था। भारत सरकार ने निश्चय कर लिया था कि जब तक पाकिस्तान काश्मिर से अपनी सेनाएँ नहीं हटा लेगा, संयुक्त पावने में से पाकिस्तान के भाग की ~~रकम~~ रकम उसे नहीं दी जायेगी। गाँधी जी का सुझाव था कि भारत सरकार अपना सद्भाव प्रकट करने के लिए पाकिस्तान को बिना किसी शर्त के उस भाग का पचपन करोड़ रुपया दे दे। भारत सरकार पाकिस्तान को आक्रमण में, अपने ही विरुद्ध सहायता देने के लिए तैयार नहीं थी। मंत्रि - मंडल को गाँधी जी का परामर्श व्यावहारिक नहीं लगा, उन्होंने उस परामर्श को स्वीकार नहीं किया। गाँधी जी ने सद्भावना और सहिष्णुता के लिए अपने उपदेशों और प्रयत्नों को विफल होते देखकर अपने उद्देश्य के लिए प्राणों की आहुति देने का निश्चय कर लिया।[60]

१३ जनवरी, सन् १९४८ । रेडियो और पत्रों ने सूचना दी - गांधी जी ने आमरण अनशन की प्रतिज्ञा कर ली है। पूरा देश सिहर कर स्तब्ध हो गया। दिल्ली उस चिन्ता और सनसनी का केन्द्र थी। "गांधी जी १३ जानवरी के मध्यान्ह से अनशन व्रत आरम्भ करते हैं । गांधी जी के अनशन का अन्त भारत में, विशेष कर दिल्ली में साम्प्रदायिक उन्माद का अन्त होने पर ही होगा अथवा उनका शरीरान्त ही होगा।" उन्होंने संक्षिप्त शब्दों में कह दिया था - जब तक साम्प्रदायिक द्वेष का उन्माद समाप्त होकर हिन्दू - मुसलमानों में सौहार्द्र स्थापित नहीं होगा, वे अनशन से रहेंगे।[१]

उस समय पत्रों और राजनीतिक चर्चा में पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपया दिया जाने अथवा न दिया जाने का ही प्रश्न प्रमुख था। गांधी जी सद्भावना की अपीलें कर रहे थे। वे निरन्तर माँग कर रहे थे कि सरकार दिल्ली में मुसलमानों की रक्षा का पूरा प्रबन्ध करे । दिल्ली से जो मुसलमान भय के कारण भाग गये हैं, वे लौटकर निर्भय दिल्ली में रह सकें। हिन्दू शरणार्थियों ने मुसलमानों के जिन मकानों और मस्जिदों पर कब्जा कर लिया है, वे मुसलमानों को लौटा दिये जायें। गांधी जी के अनशन के इन उद्देश्यों के कारण अधिकांश हिन्दुओं ने, विशेष कर पश्चिम और पूर्वी पाकिस्तान से निकाल दिये गये हिन्दुओं ने इस अनशन को मुसलमानों के प्रति अनुचित पक्षपात समझा। उनका कहना था कि पाकिस्तान और मुसलमान उन पर आक्रमण कर रहे थे। और इस आक्रमण में गांधी जी पाकिस्तान और मुसलमानों के पक्ष में थे । अधिकांश हिन्दू गांधी जी के व्यवहार से क्रोध से उबल पड़े ।

मिस्टर अगरवाला के घर दी गयी पार्टी में भी इसी बात की चर्चा होती है, - "हिन्दुओं को मरवा डालने के लिये . . . . ।" . . . . . "मुल्ले जा - जाकर कान भरते हैं।" . . . . . "सरदार पटेल कैसे मान सकते हैं। कभी नहीं मान सकते।" . . . . "गांधी जी

मर जायें, हमें क्या ? इन्साफ के खिलाफ करेगा तो . . . . . ।"..... "गांधी हमारे गिराये हुये मकान बनवा देंगे ? तारा को भी लग रहा था, गांधी जी ने मुसलमानों की सहायता के लिये अपने उपवास से हिन्दुओं पर अप्रत्यक्ष आक्रमण कर दिया है। हिन्दू पराजय स्वीकार करके आत्महत्या कर ले . . . . . लोगों को नेहरू जी, मौलाना आजाद पर भरोसा नहीं है, परन्तु सरदार पटेल, श्यामा प्रसाद मुकर्जी और सरदार बलदेव सिंह यह नहीं होने देंगे। गांधी जी यह क्या कर रहे हैं ? नरोत्तम ने कहा, "बड़ी कठिन स्थिति है। गांधी जी का अनशन कैबिनेट के निर्णय के विरुद्ध है। जनता तो कैबिनेट के साथ है। गांधी जा का अनशन निश्चय ही भारत के विरुद्ध, पाकिस्तान के पक्ष में है।" [62] इसका विरोध लोगों ने अनेक जुलूसों में नारे लगा - लगाकर किया - "खून का बदला खून से लेंगे।", "गांधी को मर जाने दो।" , "गांधी मुल्क का दुश्मन है।", "मुसलमानों को बाहर निकालो।", "काश्मीर हमारा है।", पाकिस्तान को रुपया नहीं देंगे। ", "गांधी गद्दार है।" [63]

१६ जनवरी प्रात: पत्रों में समाचार था - भारत सरकार ने अपना पहला निश्चय बदलकर पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये का पावना तुरन्त दे देने की घोषणा कर दी थी। सरकारी वक्तव्य विस्तृत था। मंत्रिमण्डल के पहले निश्चय का औचित्य प्रमाणित करके निर्णय - परिवर्तन का कारण गांधी जी के अहिंसात्मक प्रयत्न में सहयोग देने की सद्भावना बताया गया था। और उठारह जनवरी को गांधी जी ने अनशन समाप्त किया। गांधीजी की इसी पक्षपाती नीति के विरोध में उत्तेजित होकर ३० जनवरी संध्या पाँच बजे बिड़ला भवन की ओर प्रार्थना-सभा में जाते वक्त नाथूराम गोडसे नामक युवक द्वारा गोलियाँ चलाकर हत्या कर दी गयी - रेडियो पर बताया गया, "आज संध्या सवा पाँच से कुछ पूर्व, जिस समय राष्ट्र - पिता महात्मा गांधी बिड़ला भवन में प्रार्थना स्थल की ओर जा रहे थे, एक हिन्दू युवक ने पिस्तौल से तीन गोलियाँ चलाकर गाँधी जी की हत्या कर दी हैं। महात्मा गांधी जी का देहान्त गोलियाँ लगते ही हो गया। अंतिम समय उन्होंने "राम - राम" उच्चरण किया। इस समय भारत के गवर्नर

जनरल लार्ड माउन्टबैटन, प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरु, गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना अबुलकलाम आजाद बिड़ला भवन में पहुँच चुके हैं।[64]

** आलोच्य उपन्यासों में साम्य - भेद, विशेषताएँ आदि की तुलना :-

यदि हम भारत के इतिहास के आधारपर आलोच्य उपन्यासों में प्राप्त ऐतिहासिक विवरणों की जाँच करें तो उसकी सत्यता की प्रतीती मिलेगी। लीग और कांग्रेस के बीच साम्प्रदायिक विद्वेष, मुस्लिम लीग की १६अगस्त १९४६ को "प्रत्यक्ष कार्रवाई" १५ अगस्त १९४७ को देश का विभाजन, लोगों का अपने वास्तविक स्थानों से उखड़ना, कत्लेआम, बलात्कार, अग्निकाण्ड आदि घटनाओं का इतिहास प्रमाण है।

आलोच्य कृतियो का प्रथम तथा महत्त्वपूर्ण साम्य है, "विषय की समानता"। तीनों कृतियों का मूल उद्देश्य है "देश - विभाजन की समस्या" को चित्रित करना है। आलोच्य उपन्यास राजनीतिक और सामाजिक उपन्यास होते हुए भी अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व रखते हैं। आलोच्य कृतियों में विभाजन के समय की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक आदि परिस्थितियों का ऐतिहासिक आधार पर यथार्थ चित्रण किया गया हैं। आलोच्य उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि उपन्यास में घटनाओं के साथ दी गई तिथियाँ ऐतिहासिक महत्त्व रखती हैं, जिससे आलोच्य उपन्यासों को योग्य तथा यथार्थ चित्रण करने में सफलता प्राप्त हुई है। आलोच्य उपन्यास चरित्र - प्रधान तथा वैज्ञानिक न होकर घटना-प्रधान उपन्यास हैं। आलोच्य कृतियों में ~~घटनाओं/और~~ घटनाओं को प्रधानता दी गई है, इनमें भारत - विभाजन की समस्या का सूक्ष्म, मार्मिक, हृदय - द्रावक घटनाओं द्वारा चित्रण किया गया है।

आलोच्य कृतियों में कुछ महत्त्वपूर्ण भेद भी देखे जा सकते हैं। - तीनों कृतियों में विषय की समानता तथा ऐतिहासिक यथार्थ चित्रण होते हुए भी "झूठा - सच" तथा "तमस" से भी अधिक सूक्ष्म, मार्मिक तथा यथार्थ चित्रण सागर जी के "और इन्सान मर गया उपन्यास में है। क्योंकि प्रस्तुत उपन्यास

विभाजन के तुरन्त बाद लिखा गया है, तो "झूठा - सच" और "तमस" में काल का अन्तर है। आलोच्य कृतियों के चित्रण में "यशपाल" तथा "साहनी" जी का दृष्टिकोण मार्क्सवादी है; परन्तु सागर जी पर तत्कालीन परिस्थितियों तथा काल का तीव्र प्रभाव कृति पर पड़ा है। आलोच्य कृति उनकी तत्कालीन प्रतिक्रिया है। आलोच्य कृतियोंयो में और एक भेद यह भी है कि, "और इन्सान मर गया" "तथा "झूठा-सच" में विभाजन के पूर्व की और विभाजन के बाद की परिस्थितियों का चित्रण है बल्कि "तमस" में तो केवल विभाजन पूर्व की स्थिति को ही चित्रित किया है॥ स्थल-काल की दृष्टि से "और इन्सान मर गया" और "झूठा - सच" में महत्त्वपूर्ण साम्य हैं दोनों कृतियों में विभाजन के समय की लाहोर तथा पंजाब की परिस्थिति को चित्रित किया गया है जब की "तमस" का स्थल साहनी जी ने दिल्ली से दूर एक शहर को चुना है।

विभाजन पूर्व हिन्दू - मुस्लिम साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण कलकत्ता, नोआखाली, बंगाल आदि स्थानों में हुए भयानक दंगों का चित्रण -"और इन्सान मर गया तथा "झूठा - सच" में किया गया है, दोनों के चित्रण में साम्य है। विभाजन के समय की नारी की दयनीय स्थिति को तीनों कृतियों में चित्रित किया गया हैं, नारी के प्रति हुए अत्याचारों को "और इन्सान मर गया" में उषा, निर्मला, अनंती आदि के चरित्रों द्वारा तो झूठा - सच" में तारा और बन्तों के तथा "तमस" में जसबीर कौर तथा प्रकाशों के चरित्रों द्वारा चित्रित किया गया हैं ।

कथावस्तु की दृष्टि से "झूठा - सच" एक विशाल, बृहदकाय उपन्यास है, तो "तमस", "और इन्सान मर गया" की कथावस्तु "झूठा - सच" की तुलना में संक्षिप्त बन पड़ी है। "झूठा - सच" और "तमस" में पात्रों की अधिकता हैं, जब कि "और इन्सान मर गया" में पात्रों की संख्या कम है।

कॉंग्रेस के प्रति जनता की निराशा तथा कम्युनिस्टों के प्रति बढ़ता प्रभाव "झूठा - सच" तथा "तमस" में दिखायी देता है। "झूठा - सच" में साम्यवादी पात्रों के माध्यम से स्टूडेन्ट फेडरेशन के कई सदस्यों के माध्यम से तो "तमस" में मास्टर ब देवव्रत तथा उनके साथियों द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। "और इन्सान मर गया" में कॉंग्रेसी नीति को ही अधिक महत्त्व दिया गया है।

"सागर जी ने "और इन्सान मर गया" में मानव की विवशता और दृढ़ता का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास के यथार्थ तथा सजीव चित्रण का कारण लेखक की अनुभूत सन्निकटता है लेखक ने उस समय देखे, अनुभव तथा सुनी हुई घटनाओं के आधार पर उसवक्त की परिस्थिति, हत्याकाण्ड, मानव की पशु भावनाओं का सफल और सजीव चित्रण किया है। लेखक ने प्रस्तावना में कहा है कि, जब ३मार्च १९४७ को पंजाब के पसादों का श्रीगणेश लाहोर में हुआ तो मैं वहीं था, और तत्पश्चात् वहाँ कि की सुप्रसिद्ध, हँसते - गाते, बारोनक रोमाण्टिक गली - कूचों की भयानक वीरानी और उजाड़ से तंग आकर और स्वयं भी घायल होने के बाद मुझे मजबूर होकर वहाँ से निकलना पड़ा।

आलोच्य उपन्यास के चित्रण में लेखक ने आनंद के चरित्र द्वारा जीवन के हर संघर्ष का धीरज से सामना करने की प्रेरणा दी है। आनंद विभाजन के समय व्याप्त ह व्याप्त इन्सान की क्रूरता, बर्बरता, उपेक्षा, घृणा, स्वार्थ आदि मानव की पाशविक वृत्तियों को देखकर भी वह इन घृणा से भागता नहीं इन वृत्तियों को सुधारने की अन्ततक कोशिश करता है लेकिन अन्त में निराश होता है, हार जाता है। आलोच्य उपन्यास में सर्वत्र लेखक का निराशावादी दृष्टिकोण ही दिखता हैं, यह निराशामय दृष्टि लेखक की तत्कालीन सामयिक भावुकता के परिणाम स्वरूप है, क्योंकि यह उपन्यास विभाजन के तुरन्त बाद, याने डेढ़ वर्ष में ही लिखा था इसलिए उसवक्त सारे देश में विभाजन के कुपरिणाम तीव्र रूप में स्थित थे इसलिए उनकी रचना अधिक गहन, मार्मिक तथा सूक्ष्म बन पड़ी है।

आलोच्य उपन्यास का मूल उद्देश्य विभाजन के समय की घृणा, प्रतिशोध और साम्प्रदायिकता की बाढ़ में बहते हुए मानवों की मन: स्थिति, उनकी विवशता, दृढ़ता आदि का यथार्थ चित्रण करना है। उपन्यास का नायक आनंद इन सभी परिस्थितियों से जूझते - जूझते हार जाता है तो मौलाना से कहता है, - "तुम तो यह चाहते हो कि यह भूख और प्यास से तड़प - तड़पकर मरें, और फिर जब इसकी माँ मिले तो उसकी छातियाँ भी कटी हुई हों। मैं अब तुम्हें पहचान गया हूँ। मैं अब इनसान को पहचान गया हूँ। उषा को मेरे साथ भेजकर तुमने उसे विष पिला दिया, उस लड़की को कैम्प में छोड़कर उसे डसने के लिये साँप भेज दिये। माँ की छातियाँ काटकर तुम बच्चों को दे जाते हो। मैं तुम सबको पहचानता हूँ - तुम खुदा के इन बन्दों को इन हिन्दुओं और मुसलमानों को इसलिए जिंदा रखना चाहते हो कि वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रिफ्यूजी कैम्पों में पड़े सड़ जाएँ भूख से तड़प-तड़प कर मर जाएँ, तूफानी नदियों में डूब जाएँ - लेकिन जो इन्हें मृत्यु की शक्ति प्रदान करना चाहते हैं, तुम उन्हें रोकते हो- मैं तुम्हें जान गया हूँ - तुम सब इनसान हो-तुम सब इन्सान हो। मैं इस मासूम को तुम्हारे चंगुल से मुक्ति दिलाऊँगा - मैं इसे बचाऊँगा।"[६५] यह कहकर उसने मौलाना के हाथ से बालक को छीनकर पुल के उपरसे दरिया में फेंक दिया। घृणा में विष की - सी शक्ति है, वह दूसरे को तो मारती ही है, अपने को भी नहीं छोड़ती। लेखक ने आलोच्य उपन्यास में आनंद के उपर्युक्त कथन द्वारा यह स्पष्ट किया है कि जब हिंसा, वध और हर पुण्य -भावना का सतीत्व नष्ट हो जाता है, जब यह भावना अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है-तो मानव के पास आत्महत्या के सिवा और कोई चारा नहीं रहता। घृणा और हिंसा का परिणाम भयानक होता है यही लेखक को स्पष्ट करना है।

"झूठा - सच" में यशपाल जी ने पन्द्रह वर्षों [१९४२ से १९५७] के देश के सामाजिक और राजनीतिक वातावरण को ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में चित्रित किया है। यशपाल जी ने देशविभाजन से उत्पन्न परिस्थितियाँ, उनके - प्रभावों, व्यक्ति एवं समाज के जीवन में आनेवाले आन्तरिक एवं बाह्य परिवर्तनों को आधार बनाकर एक पूरे युग को व्यापक परिवेश में

चित्रित किया है। पाकिस्तान के निर्माण के बारे में हुए दंगे - फसाद, अत्याचार, मानवीय बर्बरता, प्रतिशोध की भावना, असहाय स्त्रियों की बेइज्जती, शरणार्थियों की पीड़ा, शरणार्थी कैम्पों की स्थिति, उनके कार्य, नेताओं की स्वार्थपूर्ण नीति आदि का यथार्थ सजीव चित्रण किया गया है। आलोच्य उपन्यास में विभाजन की समस्या का ऐतिहासिक दृष्टि से सर्वांगीण/विस्तृत चित्रण हुआ है।

"झूठा - सच" उपन्यास का कथानक विस्तृत है। पन्द्रह वर्षों के बीच होनेवाली राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का यथार्थवादी दस्तावेज "झूठा - सच" है। आलोच्य उपन्यास चरित्रप्रधान न होकर वातावरण प्रधान है। "झूठा - सच" की सर्वप्रमुख विशेषता है लेखक का मार्क्सवादी दृष्टीकोण। उपन्यास में चित्रित पात्रों का संघर्ष नैतिक, अनैतिक, अच्छे - बुरे आदि संघर्षों से कहीं अधिक वास्तविक है। इससे यशपाल के यथार्थवादी दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। लेखक को नारी के प्रति अत्यन्त सहानुभूति थी इसलिए लेखक ने समाज में पुरुष के साथ समानाधिकार पाने के लिए नारी को प्रथम आर्थिक रूप से सबल बनाया ता की वह पुरुषों के अन्याय का विरोध कर सकें। उपन्यास की नायिका तारा असद नामक युवक को चाहती है लेकिन उसके घरवाले उसका ब्याह सोमराज नामक एक छ. लफंगे युवक से करते हैं। तारा भाग जाकर इस अन्याय का विरोध करती है। लेकिन नब्बू तथा हाफिज के जाल में फँस जाती है। लेकिन हिम्मत नहीं हारती, वहाँ से भी निकलकर दिल्ली पहुँचती है अच्छी नोकरी पाती है। डॉ. नाथ से विवाह कर लेती है।

इसीतरह लेखक ने कनक तथा पुरी का उदाहरण दिया है। कनक के घरवालों के विरोध के बावजूद दोनों विवाह कर लेते है, बादमें विचारों की विषमता के कारण दोनों को अलग होना पड़ता है और अंतमें कनक गिल से प्रेम करने लगती है। इसतरह आलोच्य उपन्यास में लेखक ने विवाह को अधिक महत्त्व न देकर प्रेम को अधिक महत्त्व दिया है। उपर्युक्त चित्रित परिस्थिति से लेखक का मार्क्सवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है, जिसके कारण

उन्होंने आलोच्य उपन्यास में नारी परतन्त्रता का विरोध किया है। लेखक में साम्यवादी दृष्टिकोण भी है जो विभाजन के वक्त के धर्मान्धता को चित्रित करते समय स्पष्ट हुआ है। - इसे यशपाल जी ने "झूठा - सच" में हरपिन्द्र साहब के माध्यम से प्रस्तुत किया है। हरपिन्द्र साहब की दृष्टि में मुस्लिम धर्म अधिक श्रेष्ठ तथा हिन्दू धर्म तुच्छ है। "वे कहते है हिन्दू लोग औरत को खानदान की जायदाद मानते हैं। विधवा को पति की लाश के साथ जला देना पुण्य समझते हैं। इससे ज्यादा हैवानियत और क्या होगी ? हरपिन्द्र साहब हिन्दू धर्म के बारे कहते हैं - "हिन्दू स्वभाव से शासक नहीं, बनिया होता है। आजादी का उसके पास कोई महत्त्व नहीं। हिन्दुओं में आजादी का जज्बा है ही नहीं न उन्हें आजादी की जरूरत है। . . . . हिन्दू में हुकूमत करने की काबिलियत और माद्दा नहीं होता। मुसलमान को खुदा ने हुकूमत करने के लिये ही पैदा किया है।[66]

"तमस" में साहनी जी ने विभाजन पूर्व साम्प्रदायिक, धार्मिक संकीर्णता का परिणति में उद्भूत हुए अमानवीय कृत्यों का अनेक पात्रों के माध्यम से चित्रण है। विभाजन पूर्व साम्प्रदायिक वैमनस्य की भावना कैसे उभरी ? उसके पिछे कौनसे प्रेरक तत्व रहे इसका जीवन्त चित्रण करना ही "तमस" का मूल उद्देश्य है। "तमस" में लेखक ने धर्म और राजनीति के सभी पहलुओं को चित्रित किया है। यहाँ धर्म का विकृत स्वरूप प्रधान है। - धर्म और पूँजीवाद के मिलने से एक ओर सामान्य हिन्दू मुसलमानों के प्रति घृणा भाव विकसित हो जाता है तो दूसरी ओर व्यापारी मुसलमान तथा हिन्दुओं के प्रति आदर-भाव। आलोच्य उपन्यास में इसे लेखक ने रघुनाथ, लाला लक्ष्मीनारायण शाहनवाज तथा मिल्खी आदि के परस्पर व्यवहारों से स्पष्ट किया है। - शाहनवाज जो फिसाद के समय अपने हिन्दु मित्रों की जैसे लाला लक्ष्मीनारायण तथा रघुनाथ की खूब सेवा करता है, उन्हें सुरक्षित स्थानपर पहुँचाता है, क्योंकि वे पूँजीपति हैं। शाहनवाज के मनमें भी घृणित साम्प्रदायिक भावना है, जो मिल्खी के प्रति व्यवहार से दिखाई देती है। रघुनाथ की पत्नी पूँजीपति शाहनवाज को धन्यवाद देती है लेकिन उनके ही

घर की रक्षा करनेवाला, उनका सुख - दु:ख का साथी मिल्खी जख्मी होता है तो बहाने बनाकर उसको लाना टालते हैं। लेखक ने यहाँ पूँजीवाद तथा साम्प्रदायिकता के द्वारा समाज, की खोखली अध्यात्मिकता को स्पष्ट किया है । विभाजन के समय व्याप्त अंधकार को हटा देने का प्रयास "तमस" में किया है ।

और अन्त में आलोच्य कृतियों में स्थित साम्य-भेद तथा भिन्न - भिन्न विशेषताओं को देखते यह कहना अनुचित न होगा कि आलोच्य कृतियाँ "देश विभाजन की समस्या" को चित्रित करनेवाली यथार्थ तथा सजीव कृतियाँ हैं जिसे विस्मृत करना असम्भव है। आलोच्य उपन्यास अपने कलात्मक संयम, भाषा कौशल प्रभावान्विति और उद्देश्य की व्यापकता के कारण हिन्दी साहित्य को एक विशेष देन मानना चाहिए। आलोच्य उपन्यास राजनीतिक सामाजिक उपन्यासों के साथ - साथ ऐतिहासिक महत्त्व भी रखती है।

*****

-: सन्दर्भ - सूची :-

१. यशपाल, "झूठा - सच", प्रथम भाग - विप्लव कार्यालय, तृतीय संस्करण १९६३ पृ. ८५

२. भीष्म साहनी, "तमस" राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, १९७७ पृ. ३४

३. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ३४

४. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ३५

५. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ३६

६. यशपाल "झूठा - सच" - प्रथम भाग पृ. ११५

७. यशपाल "झूठा - सच" - प्रथम भाग पृ. २६

८. यशपाल "झूँठा - सच" - प्रथम भाग पृ. ७९

९. यशपाल "झूठा - सच" - प्रथम भाग पृ. १२७ - १२८

१०. यशपाल "झूठा - सच" - प्रथम भाग पृ. १४२

११. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ३५

१२. भीष्म साहनी, -"तमस " पृ. ६८

१३. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. १२८

१४. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया", हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, बनारस, प्रथमा आवृत्ती ३००० पृ. १४ ६५

१५. यशपाल, ई "झूठा - सच", प्रथम भाग पृ. ८९

१६. यशपाल "झूठा - सच", प्रथम भाग पृ. ११२

१७. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ५२

१८. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. ८७

१९. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. २४८ - २४९

२०. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. १५८

२१. भीष्म साहनी, "तमस" पृ. २५०

२२. यशपाल "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ८७-८८

२३. यशपाल "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. २१७

२४. भीष्म साहनी - -"तमस" पृ. १९७

२५. और इ

२५. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ४६

२६. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ४७

२७. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ७९

२८. रामानंदसागर, "और इन्सान ह मब=ग= मर गया" पृ. ७६

२९. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ७७

३०. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ८८

३१. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ९०

३२. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. १०१ १०२

३३. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. १११

३४. यशपाल , "झूठ - सच" प्रथम भाग पृ. पृ. २६२

३५. यशपाल "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. २६३

३६. यशपाल "झूठा ५ सच" प्रथम भाग पृ. ३२०

३७. यशपाल "झूठा - सच" प्रथम भाग पृ. ३८१

३८. भीष्म - साहनी "तमस" पृ. २४४,
पृ. २४७

३९. रामानंदसागर "और इन्सान मरगया" पृ. ११३

४०. रामानंदसागर "और इन्सान मर गया" पृ. ११५

४१. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ११७

४२. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. १६६

४३. रामानंदसागर, -और इन्सान मर गया" पृ. १६७

४४. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. २२४

४५ रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. २३८

४६. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. २५८

४७. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. २५८

४८. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. १९१

४९. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ४४२-४४३

५०. रामानंदसागर, "और इन्सान मर गया" पृ. ४४९

४९.	यशपाल	"झूठा - सच" प्रथम भाग	पृ. ४४२-४४३
५०.	यशपाल	"झूठा - सच" प्रथम भाग	पृ. ४४९
५१.	यशपाल	"झूठा - सच" प्रथम भाग	पृ. ४५१
५२.	यशपाल	"झूठा - सच" -"-	पृ. ४७२
५३.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. २५-२६
५४.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १७१-१७२
५५.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १३७
५६.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया"	पृ. २३०-२३१
५७.	रामानंदसागर,	"और इन्सान मर गया"	पृ. २२४
५८.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १८८
५९.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. ८४-८५
६०.	यशपाल	"झूठा " सच" द्वितीय भाग	पृ. १८९
६१.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १८९
६२.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १९४
६३.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. १९९
६४.	यशपाल	"झूठा - सच" द्वितीय भाग	पृ. २२४

-***-